MANAVA BHARATI
INTERNATIONAL SCHOOL, PATNA
AFFILIATED TO CBSE, NEW DELHI

शब्दों की ज़ुबानी

हमारी कविता - हमारी कहानी

भाग-2

कक्षा : 3 से 6

शब्दों की जुबानी

हमारी कविता - हमारी कहानी

(असंपादित)

भाग—2

कक्षाः 3 से 6

MANAVA BHARATI INTERNATIONAL SCHOOL

Patna (Bihar, India)

CONTENTS

Sr. No.	Title	Writer/Author	Page No.
1.	कदम मिलाकर आगे बढ़ता चल	Aleena, 3	8-8
2.	परियों का शहर और काली परी	प्राग्रिका शेखर, 3‘A’	9-9
3.	चींटी	अवन्या, 3‘A’	10-10
4.	रामू	Sanvi Roy, 3‘A’	11-11
5.	कहानी	सृष्टि शर्मा, 3‘A’	12-13
6.	बंदर और हाथी की कहानी	गोलू कुमार, 3‘A’	14-15
7.	शब्दों की जुबानीः हमारी कविता हमारी कहानी	Md. Yusuf, 3‘A’	16-17
8.	शैतान कौआ	सक्षम, 3‘A’	18-18
9.	पहली शिक्षा	उत्कर्ष कुमार अर्नव, 3‘A’	19-20
10.	मेरी ममा	अहाना देव, 3‘A’	21-22
11.	शब्दों की जुबानीः हमारी कविता हमारी कहानी	शिवम, 3‘B’	23-24
12.	कहानी	Bisma, 3‘B’	25-27
13.	रात की बात	Anayra, 3‘B’	28-28
14.	शब्दों की जुबानीः हमारी कविता हमारी कहानी	संस्कृति, 3‘B’	29-30
15.	कहानी	अंशी शर्मा, 3‘B’	31-31
16.	मेरी कहानी	Inaaya Shahid, 3‘B’	32-33
17.	कहानी	वंश, 3‘B’	34-34
18.	खुद पर कविता	अभिनव, 4‘A’	35-35
19.	नाना–नानी	अमोल झा, 4‘A’	36-36
20.	सवेरा	Vihaan Bharadwaj, 4‘A’	37-37
21.	जादुई कटोरा	कामिज रजा, 4‘A’	38-39
22.	रे मामा रे मामा रे	Divyanshi Singh, 4‘A’	40-41
23.	तितली पर कविता	Aadila Fahim, 4‘A’	42-42
24.	क्रिकेट	Ansh Raj, 4‘A’	43-43
25.	धरती	अनमोल अव्यन श्रीवास्तव, 4‘A’	44-44

Sr. No.	Title	Writer/Author	Page No.
26.	किताबें	Paras Gakhar, 4‘A’	45-45
27.	शब्दों की जुबानीः हमारी कविता, हमारी कहानी	Myra Mishra, 4‘A’	46-46
28.	जोकर	Ishita Raj, 4‘A’	47-47
29.	प्यासा कौआ	आशीष, 4‘B’	48-48
30.	एकता में बल है	नीरजा, 4‘B’	49-51
31.	प्यासा कौआ	आरिफा अब्दुल करीम, 4‘B’	52-52
32.	प्यासा कौआ	Alham, 4‘B’	53-53
33.	चालाक लोमड़ी	शनाया यादव, 4‘B’	54-54
34.	प्यासा कौआ	फिजा फातिमा, 4‘B’	55-56
35.	एकता में बल	कल्याणी अर्था, 4‘B’	57-58
36.	एकता में बल	सुनिधि सिन्हा, 4‘B’	59-60
37.	प्यासा कौआ	मानसी रानी, 4‘B’	61-61
38.	चालाक लोमड़ी	Sristi Priya, 4‘B’	62-64
39.	चालाक लोमड़ी	आरूही कश्यप, 4‘B’	65-66
40.	फूल	कुणाल, 5‘A’	67-68
41.	पानी की बचत	अवि प्रकाश, 5‘A’	69-70
42.	एक चिड़िया	रुद्र राज, 5‘A’	71-71
43.	एकता में बल है	सेजन वैष्णव, 5‘A’	72-73
44.	पुस्तक	हर्षिता रॉय, 5‘A’	74-74
45.	गर्मी के दिन	शानजा फातिमा, 5‘A’	75-75
46.	मदद	शानजा फातिमा, 5‘A’	76-77
47.	सच्चा बालक	आद्या श्रीवास्तव, 5‘A’	78-78
48.	सच्चाई की राह	आईशा ईजास, 5‘A’	79-79
49.	एक चिड़िया की समझदारी	ईशिता, 5‘A’	80-81
50.	एक चिड़िया	प्रिन्स कुमार, 5‘A’	82-83
51.	बचपन	अलवीना हुसैन, 5‘A’	84-84
52.	पेड़	वेदांत सिंह, 5‘A’	85-85
53.	गुलमोहर का पेड़	Rishi Dhanraj, 5‘A’	86-86
54.	कविता	समृद्धि शर्मा, 5‘B’	87-87

Sr. No.	Title	Writer/Author	Page No.
55.	आजादी का पर्व	Sanskriti Singh, 5‘B’	88-88
56.	ईमानदार लड़का	सूर्यकांत पाल, 5‘B’	89-91
57.	शब्दों की जुबानीः हमारी कविता हमारी कहानी	Darsh, 5‘B’	92-93
58.	मेरा पहला स्कूल का दिन	अंजलि, 5‘B’	94-94
59.	शब्दों की जुबानीः हमारी कविता हमारी कहानी	संस्कृति, 5‘B’	95-96
60.	सच्चा दोस्त	भोला कुमार, 5‘B’	97-97
61.	सच्चा दोस्त	चिन्मय सिंह, 5‘B’	98-99
62.	एक चिड़िया थी	शाकेब, 5‘B’	100-101
63.	ईमानदार लड़का	अयान इलीयाशी, 5‘B’	102-103
64.	सच्चा दोस्त	आस्था कुमारी, 5‘B’	104-104
65.	सच्चा दोस्त	अदिबा फातिमा, 5‘B’	105-105
66.	ईमानदार लड़का	अनिका चौधरी, 5‘B’	106-107
67.	सच्चा दोस्त	हुमाईरा हैदर, 5‘B’	108-108
68.	सच्चा दोस्त	सनाया, 5‘B’	109-109
69.	ईमानदार लड़का	Kr. Rudra, 5‘B’	110-113
70.	ईमानदार लड़का	लाइबा समी, 5‘B’	114-115
71.	ईमानदार लड़का	अराध्या, 5‘B’	116-117
72.	मुसीबत ही मुसीबत	शाम्भवी, 5‘B’	118-119
73.	कविता	समृद्धि शर्मा, 5‘B’	120-121
74.	सच्चा दोस्त	आकृति कुमारी, 5‘B’	122-123
75.	एक चिड़िया थी	अंजना, 5‘B’	124-126
76.	एक ईमानदार लड़का	Yazhini R.P., 5‘B’	127-128
77.	हमारी कविता, हमारी कहानी	Mudassir Khan, 5‘B’	129-129
78.	राधा की माँ	मोहम्मद अफान अहमद, 6‘A’	130-130
79.	खोया हुआ खिलौना	शाश्वत, 6‘A’	131-131
80.	खोया हुआ खिलौना	तन्मय राज, 6‘A’	132-132
81.	राधा की माँ	अनचित, 6‘A’	133-134
82.	खोया हुआ खिलौना	दिव्यांशी, 6‘A’	135-136

Sr. No.	Title	Writer/Author	Page No.
83.	राधा की माँ	आरोही, 6‘A’	137-138
84.	अंधेरे में	युसुफ खान, 6‘A’	139-140
85.	राधा की माँ	सत्यम स्वराज, 6‘A’	141-142
86.	मेरा अभिमान	त्रिशा गुप्ता, 6‘A’	143-143
87.	खोया हुआ खिलौना	आयुश कुमार सिंह, 6‘A’	144-144
88.	मेरा पसंदीदा खिलौना	फातिमा फैज खान, 6‘A’	145-145
89.	मेरा पालतू जानवर	मन्नत महफूज खान, 6‘A’	146-146
90.	मेरा पालतू जानवर	विख्यात सेठ, 6‘A’	147-147
91.	मेरा पालतू जानवर	नैफ हयात, 6‘A’	148-149
92.	मेरा पालतू जानवर	प्रीत कुमार सिंह, 6‘A’	150-150
93.	अंधेरे में	विनायक विजयेश, 6‘A’	151-151
94.	मेरा पालतू जानवर	Shagil, 6‘A’	152-152
95.	मेरा पालतू जानवर	शौर्य प्रताप, 6‘A’	153-153
96.	मेरा पालतू जानवर	रूद्र गुप्ता, 6‘A’	154-154
97.	मेरा पालतू जानवर	समय नाथ, 6‘A’	155-155
98.	खोया हुआ खिलौना	अमन रहमान, 6‘A’	156-156
99.	अंधेरे में	अंश, 6‘A’	157-158
100.	राधा की माँ	अपर्णा, 6‘A’	159-159
101.	राधा की माँ	आराध्या शर्मा, 6‘A’	160-160
102.	राधा की माँ	अर्णव प्रकाश, 6‘A’	161-161
103.	खोया हुआ खिलौना	दिपांशी, 6‘A’	162-162
104.	राधा की माँ	इस्माईल खान, 6‘A’	163-163
105.	खोया हुआ खिलौना	मृगेन्द्र, 6‘A’	164-164
106.	राधा की माँ	मानवी कौशिक, 6‘A’	165-165
107.	मेरा पालतू जानवर	आद्या कुमारी, 6‘A’	166-167
108.	मेरा पालतू जानवर	अर्पिता रॉय, 6‘A’	168-169
109.	मेरा पालतू जानवर	सुनिधि यादव, 6‘A’	170-171
110.	मेरा पालतू जानवर	सिद्धी, 6‘A’	172-174
111.	राधा की माँ	मनस्वी सिंह, 6‘A’	175-175

Sr. No.	Title	Writer/Author	Page No.
112.	मेरा पालतू जानवर	Shreyash Raj, 6‘A’	176-177
113.	राधा की माँ	आयुषी कुमारी, 6‘A’	178-178
114.	राधा की माँ	श्रेयसी रॉय, 6‘A’	179-180
115.	मेरा पालतू जानवर	अर्कप्रवा पाल, 6‘B’	181-181
116.	खोया हुआ खिलौना	प्रज्ञा, 6‘B’	182-183
117.	राजू की माँ	मो॰ हारिस खान, 6‘B’	184-184
118.	मेरा पालतू जानवर	वानिया, 6‘B’	185-186
119.	मेरा पालतू जानवर	रक्षित राठौर, 6‘A’	187-188
120.	मेरा पालतू जानवर	नीदाल इमाम, 6‘B’	189-190
121.	मेरा पालतू जानवर	एकता राय, 6‘B’	191-192
122.	मेरा पालतू जानवर	सोनाक्षी शरण, 6‘B’	193-194
123.	राजू की माँ	आर्या कुमारी, 6‘B’	195-195
124.	मेरा पालतू जानवर	प्रज्ञान नारायण, 6‘B’	196-196
125.	खोया हुआ खिलौना	अर्जुन, 6‘B’	197-198
126.	अंधेरा	अक्स राज, 6‘B’	199-200
127.	राजू की माँ	आध्विक राज सिन्हा, 6‘B’	201-202
128.	राजू की माँ	हर्ष राज, 6‘B’	203-205
129.	राजू की माँ	आदित्य राज, 6‘B’	206-207
130.	मेरा पालतू जानवर	कुशल, 6‘B’	208-208
131.	खोया हुआ खिलौना	तनिषा सिंह, 6‘B’	209-210
132.	राजू की माँ	शानवी, 6‘B’	211-211
133.	मेरा पालतू जानवर	सोनाक्षी श्रेया, 6‘B’	212-213
134.	खोया हुआ खिलौना	मोहम्मद फैजान मलिक, 6‘B’	214-214
135.	खोया हुआ खिलौना	आद्या वत्स, 6‘B’	215-215
136.	राजू की माँ	आकांक्षा शर्मा, 6‘B’	216-217
137.	राजू की माँ	सौबान, 6‘B’	218-218
138.	राजू की माँ	पियूष कुमार, 6‘B’	219-220
139.	अंधेरा	राजवी सिंह, 6‘B’	221-222
140.	खोया हुआ खिलौना	आलिया, 6‘B’	223-224

प्राक्कथन

बच्चों के सर्वांगीण विकास में लेखन कला का एक महत्वपूर्ण स्थान है, जिसके द्वारा बच्चों की भाषा को कुशल और समृद्ध किया जा सकता है । कक्षा 1 से 9 तक के बाल लेखकों द्वारा लिखी गई कहानी और कविताओं का दूसरा संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है। बच्चों के रचनात्मक कल्पना की उड़ानों का यह जीता–जागता प्रमाण है, जिसके माध्यम से बच्चे अपनी भाषा कौशल को प्रदर्शित कर रहे हैं।

यह पुस्तक महत्वपूर्ण है, क्योंकि कहानियाँ और कविताएँ जो बच्चों ने लिखीं हैं वह उनके शब्दों में हैं तथा संपादन रहित है। संपादन नहीं करने का निर्णय बाल लेखकों को अपनी कल्पनाशीलता के उड़ान में मदद करेगा। उन्हें स्वतंत्रता और स्वच्छंद अवसर प्रदान करेगा, जिससे वे अपने काल्पनिक उड़ान को पंख दे सकें। अपनी लिखी और प्रकाशित कहानी पढ़ने और पढ़ाने का आनंद ही अलग होता है; इससे बच्चों में स्व का बोध होता है जो उनके सर्वांगीण विकास व गर्व की भावना के लिए महत्वपूर्ण है और प्रेरणा का श्रोत भी है। इस रचनात्मकता तथा कल्पनाशीलता को गढ़ने में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

यह आत्म–अभिव्यक्ति का एक माध्यम है जो बाल लेखकों को प्रोत्साहित करता है। अपने विचारों को शब्द में पिरोने के लिए जहाँ विचार प्रबल होगा वहाँ लेखनी को बल मिलेगा, जो बच्चों को प्रेरित करेगा अपने विचारों को कलमबद्ध करने के लिए। यह प्रयास लेखकों को अपनी भाषा की शुद्धता और शब्दों की गंभीरता को समझने में मदद करेगा।

बच्चों के लिखने के इस प्रयास में माता–पिता की भूमिका तथा शिक्षकों का सहयोग महत्वपूर्ण है। इसके लिए आप सभी को बधाई! आपका यह प्रयास लेखकों के आत्म–अभिव्यक्ति को पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

अनुपम मिश्र
प्राचार्य

कदम मिला कर आगे बढ़ता चल

Aleena -3

कदम मिला कर आगे बढ़ते
जितना सीखा पढ़ते-पढ़ते
हर कठनाई से हम भिड़ते
कदम मिला आगे बढ़ते-आगे बढ़ते।
जितना सीखा पढ़ते-पढ़ते !

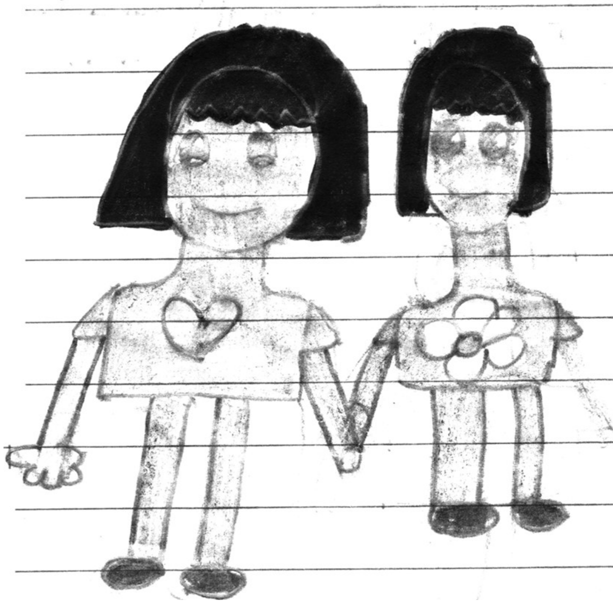

परियों का शहर और काली परी

प्राग्रिका शेखर 3. अल्फा

एक बार की बात है, एक परियो का शहर था। उसमें बहुत सारी परियाँ रहती थी। उसे लोग जादू का शहर भी बोलते थे। वह शहर बहुत सुदंर था। उस शहर से कहीं दूर एक और शहर थी। जसमें एक काली पारी का राज था। काली परी बहुत घमंडी थी। वह हमेशा परियों से ज़लती थी क्योंकि वह उतनी सुंदर नहीं थी। एक दिन परियों के बीचं में लड़ाई हो गई जिसमें काली परी हार गई।

चीटीं

अवन्ध्या उ 'अल्फा

हर पल चलती जाती चीटीं
श्रम का रंग सुनाती चीटीं।
कड़ी धूप हो या हो वर्षा
दाना चुनकर लाती चीटीं ×2
सचमुच कैसी कलाकार हैं।
घर खूब सजाती चीटीं।
हर पल चलती जाती चीटीं। ×2
नहीं कभी घबराती चीटीं

रामू

Sanvi Roy, 3 अल्फा

एक बार गाँव में एक छोटा लड़का रहता था। वह सबकी बहुत मदद करता था। एक बार उससे बाहर जाना पड़ा। गाँव वाले सब आए सुनाने लगे कि अब कभी मत आना। वह शहर जा रहा था। कुछ सालों बाद, रामू फिर उसी गाँव में आया। गाँव वैसा-का वैसा ही था। गाँव वाले उसके गाँव वाले घर पर गए। और उससे माफी माँगी। हमें सबकी मदद करनी चाहिए।

कहानी

सृष्टि शर्मा - 3 अल्फा

एक बार एक गाँव में एक
छोटा लड़का रहता था उसका
नाम राम था। वह वहाँ
के राजा का बेटा था।
उसकी एक बहन थी। जब
वह बड़े हो गये तो राम
एक अच्छा राजा
बन गया पर उसकी बहन
जिसका घर का नाम -मनु
था अब उसका नाम -
रानी लक्ष्मी बाई पड़

गया था। हाँ यह वही
रानी हैं जिन्हे हमारे
भारत के अंग्रेजों से
आजादी दिलाई थी।

रानी लक्ष्मी बाई

बंदर और हाथी की कहानी

गोलू कुमार/कक्षा-3 अल्फा

एक बंदर था। उसे भूख लगी थी क्योंकि उसे अभी तक खाना नहीं मिला। वे आगे चलते रहा फिर भी उसे खाना नहीं मिला। वह फिर भी आगे चलता रहा आगे चलते - चलते उसे एक हाथी मिला जो अंगूर खा रहा था। बंदर हाथी के पास गया और हाथी से बोला. हाथी भाई

मुझे बहुत जोर की भूख
लगी है। हाथी ने बोला पास
ही एक जंगल में अंगूर का
पेड़ हैं वहां बच्चे आते अंगूर
तोड़ते और चले जाते। जो अंगूर
ऊपर से नीचे अंगूर गिर जाते तो
तुम उसे खा लेना, फिर बंदर
ने मुझे खाना तो मिल गया
फिर मुझे पानी भी चाहिए
तो हाथी बोला आगे चलते-
चलते तुम्हें थोड़ी दूर एक
नदी मिलेगी वहां तुम पानी
पी लेना।

"शब्द की जुबानी हमारी कविता हमारी कहानी"

Md Yusuf 3 अल्फा

एक बार की बात है एक कुत्ता था। जिसका नाम माधावल था वह खूब खेलता उठता खाना खाता और सोता उसकी माँ रोज उसके और अपने लिए खाना लाती और वह घर पर खेलता एक दिन उसकी माँ ने उसको बोला माधावल क्या तुम मेरे साथ जाना चाहते हो" उसने कहा "हाँ माँ मैं आपके साथ जाना चाहता

हूँ माद्दावल और उसकी माँ
खाना ढूंढने आए माद्दावल खाना
ढूंढते - ढूंढते थककर वहाँ
गया उसकी माँ को लगा
की माद्दावल उनके साथ चल
रहा है वह अब घर पहुँच
गई लेकिन वहाँ माद्दावल नहीं था
उसकी माँ उसे तुरन्त उसे
ढूंढने गई पर अनदीशा को कहा
था वह तुरन्त उठा और
देखा कि वह तो
बस एक सपना था।

शैतान कौआ

सक्षम - 3 अल्फा

एक आम का पेड़ था। जिसमें एक कौआ रहता था। वह बहुत शैतान था। एक दिन उसने एक बहुत बड़ा नीम का पेड़ देखा उसपर एक गौरैया का घोंसला था। कौए ने उसे देखा और झपट से उड़ गया। घोंसले के पास वह अंडो को खाने ही वाला था, तबतक गौरैया आ गई और उसे खूब मारा और आखिरकार अपने अंडो को बचा ली।

पहली शिक्षा

उत्कर्ष कुमार अर्नव -3 अल्फा

पहले हाथ जिसका पकड़ा,
जिससे पहले शिक्षा पाई।
माता पिता वो थे मेरे,
जिन्होंने मुझे पहली राह दिखाई।
पर क्या इतने में ही मेरा पूर्ण हुआ?

नहीं...
अभी तो एक प्रकाश का मेरे जीवन में आना बाकी था।
जब विद्यालय में पाँव धरा,
तब जाना क्या छूट रहा था।

एक खान थी शिक्षा की,
की जो बिन शिक्षक ना मिलती,
आप सब गुरुदेवों ने मुझे आगे
बढ़ा ज्ञान दिया।
माता पिता का सम बनकर,
जीवन का कल्याण किया।
अभी शिक्षा बहुत है पानी,
आप सब गुरुओं को नमन है।
आप से जुड़ी है मेरी कहानी।

मेरी मंमी

अहाना देव -3 अल्का

मेरी मंमी प्यारी है

मुझे हंसाती है।

मुझे बहुत प्यार करती है

मेरा ख्याल रखती है।

मेरी मंमी अच्छी है

मेरी मंमी से मैं बहुत प्यार करती है

मेरी मंमी सब का.म करती है।

क्या आप को लगता है की

आप की मंमी आप से प्यार करती है?

चलो कहानी फिर से पढ़ते हैं।

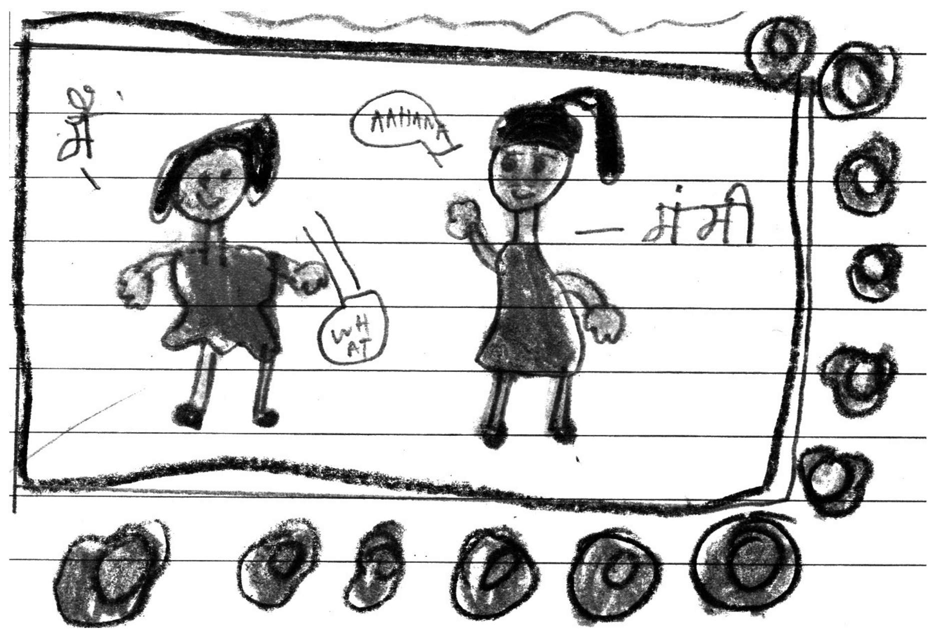

शब्दों की जुबानी हमारी कविता, हमारी कहानी

शिवम - 38

एक लड़का था उसका नाम करण
था वो एक पेड़ काट रहा था
वो आम का पेड़ था।
बहुत पुराना पेड़ था और बहुत मजबूत था
वो अपनी कुल्हाड़ी से पेड़ काटते-काटते
थक गया था। फिर उसने अपने झोले
में से खाना निकाल कर खाने लगा
फिर वो खाना खाकर वो सो
गया। उस के ऊपर से एक आम
गिरा। उससे करण की नींद खुल गई
उसे लगा कि बादल गिर रहा

है। फिर वो अपने साथियों को जानकारी दी। एक आदमी ने बोला कोई बादल नहीं गिरा था एक आम गिरा था

कहानी

Bisma, 3 (B)

एक गाँव में नीम के पेड़ पर गिलहरी और कौआ रहते थे। एक दिन गिलहरी अपनी फसल काट ने जा रही थी तो उसने कौआ भाई को पूछा कि कौआ भाई आप मेरे साथ फसल काटने चलो गे मगर कौआ बहुत आलसी था इसलिए वह नहीं जाता है तो फिर। गीलहरी चली जाती है। वह अपना काम कर आती।

तो फिर वह सो जाती । मगर
अगले दिन गिलहरी फिर काम
पर जाने लगी और इस
बार भी वह कौओं से पूछती
तो कौआ बोला तुम आगे
जाओ मैं आता हूँ गिलहरी
बोली ठीक है फिर वो चली
गई मगर कौआ नहीं आया
अगले दिन बहुत तेज़ की
आँधी आने वाली थी मगर
आज भी कौआ नहीं गया
लेकिन गिलहरी काम पर
से आ गई फिर कुछ देर बाद

तेज़ की बारिश हुई और
कौआ की फसल बह
गई और कौआ से कहा
कि आलस करना बुरी बात
होती है। इस लिए हमें
अपना काम पहले ही करना
चाहिए और कभी आलस
नहीं करना चाहिए वरना
आपके साथ भी वैसा ही
सकता है।
इस लिए आलस करना बुरी
बात होती है।

रात की बात

Anayra, 3 (B)

एक रात की बात है। रामु और उसके मित्र को नींद नहीं आरही थी और तो वह पूर्णिमाँ की रात थी। रामु ने बाहर जाकर सोचा कि मुझे तो नींद नहीं आ रही है चलो थोड़ा घूम - फीर कर आते है तो क्या पता की मुझे नीन्द आ जाए। रामु एक जगह पर चलते - चलते वह एक शमशोन घाट पर जा पहुँचा। उसने एक आवाज़ सुनी उसको पता चला कि वह एक शमशान घाट में चला गया है। उसने एक रूह चिर देने वाली आवाज़ सुनी। वह वही पर बरफ की तरह जम गया। और उसके पिछे एक खून से लथपथ एक आदमी एक कटे हुए हंस के साथ खड़ा था। रामु पिछे मुड़ कर देखा तो वहाँ पर तो कोई नहीं था। और सुबह के समय रामु के दिल की धड़कन भी वापस आ गई। तभी से रामु उस रात को नहीं भूला।

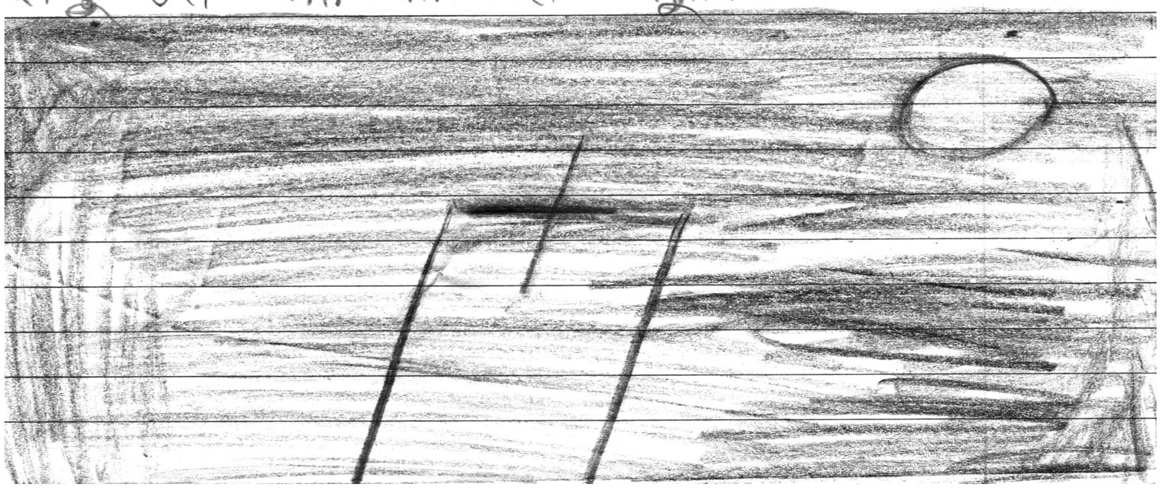

शब्दों की जुबानी: हमारी कविता, हमारी कहानी

संस्कृति

एक बार की बात एक जंगल में एक लोमड़ी रहती थी। उसे एक दिन बहुत ज़ोर की भूख लगी। वह खाने, की तलाश में इधर - उधर भटकने लगी, भटकते - भटकते वह एक पेड़ के पास पहुँची उस पेड़ की डाल पर एक मुरगा बैठा था। लोमड़ी मुरगे को देख कर खुश हो गई। लोमड़ी बहुत चालाक थी, उसने सोचा की मैं मुरगे को एक समाचार सुनाती हूँ उससे मुरगा नीचे आ जाएगा। मुरगा बहुत चालाक था। लोमड़ी ने कहा, बहन तुमने आज का समाचार सुना है आज बहुत सारे शिकारी

मुरगो का शिकार करने आएँगे तुम निचे
उतरकर मेरे घर चलो मुरगा सोचा मैं
भी समाचार सुनाता हूँ मुरगो लोमड़ी से कहा
तुमने आज समाचार सुना है आज बहुत
सारे जंगली कुत्ते को शिकारी लेकर आएँगे
लोमड़ी इस समाचार को सुनकर डर गया
फिर लोमड़ी कहा की मैं अब अपने घर
जा रहा हूँ मेरा खाना खाने का समय हो गया
है

कहानी

अंशी शरमा, तीसरी 'ब'

एक छोटा - सा गाँव था। उस गाँव के नाम त्रिपुरा था। उस गाँव में एक लड़की थी। जिसका नाम रिया था। उसके घर के पास ही एक चाय की दुकान थी। वहाँ हमेशा ग्राहकों की भीड़ लगी रहती थी। वहाँ पर एक दिन आग लग गई। तो रिया ने सबकी जान बचाई और उसे प्रधानमंत्री से उसे एक इनाम मिला।

मेरी कहानी

Inaaya shahid, 7B

एक लड़का था उसका नाम राजू था। उसे कहानी लिखना और पढ़ना बहुत पसंद था वो बहुत ही अच्छी कहानियाँ लिखता वो जब भी गाँव से गुजरता था। लोग उसे लेखक कह के पुकारते थें। एक दिन राजू एक गाँव से गुजर रहा था। उसे वहाँ एक कोने में एक बच्ची रो रही थी। राजू उस बच्ची से पूछा तुम क्यों रो रही हो? बच्ची ने बोला कि आप वहीं कहानी लिखने वाले हो ना। राजू ने बोला हाँ मैं वही हूँ बच्ची ने बोला, भईया मेरे विद्यालय में कहानी

लेखन प्रतियोगिता है। और मुझे कहानी लिखना नहीं आता। राजू ने बोला, चलो मैं तुम्हें कहानी लिखना सिखाता हूँ। बच्ची ने बोला ठीक है। फिर राजू ने उस बच्ची को बहुत अच्छी कहानी सिखाई। फिर वो बच्ची अपने विद्यालय में वो प्रथम आई।

कहांनी

वंशा - 3(B)

एक हाथी था। जिसका नाम गोलू था। वह बहुत शरारती था। एकदिन गोलू घूमने जंगल में हाथी माँ को बिन बताए गया। जंगल में गोलू को ज़मीन पर गन्ने दिखे। गोलू के मन में लालच आया गोलू गन्ने खाने के लिए आगे बढ़ा लेकिन वहाँ शिकारी ने जाल लगाया था। गोलू जाल में फँसगया शिकारी सो रहा था। उधर हाथी माँ अपने बच्चे को ढूँढ़ते हुए जंगल में आई। हाथी माँ ने देखा गोलू जाल में फँसा हुआ था। हाथी माँ परेशानी में आगई। एक पेड़ से चूहा निकला उसने कहा की हाथी बहन क्या हुआ हाथी माँ बोली मेरा बच्चा जाल में फँसगया। उसने शिकारी के जेब से चाभी निकाली हाथी माँ ने पिंजड़ा खोला।

खुद पर कविता

अभिनव - 5-अ

मैं हूँ बच्चा नन्हा मुन्हा।
नटखट हूँ पर प्यारा हूँ।
चुप चुप सा मैं रहता हूँ।
पर सभी शिक्षको का प्यारा हूँ।
माँ का राजदुलारा हूँ।
पिता के आँखों का तारा हूँ।
अभिनव मेरा नाम है।
अव्वल मैं आता हूँ।

नानी - नानी

अमोल झा, ५८

नानी - नानी सुनो कहानी,
एक था राजा, एक थी रानी।
राजा बैठा घोड़े पर, रानी
बैठी पालकी पर। बादल गरजा,
बरसा पानी, भीगा राजा,
बच गई रानी।

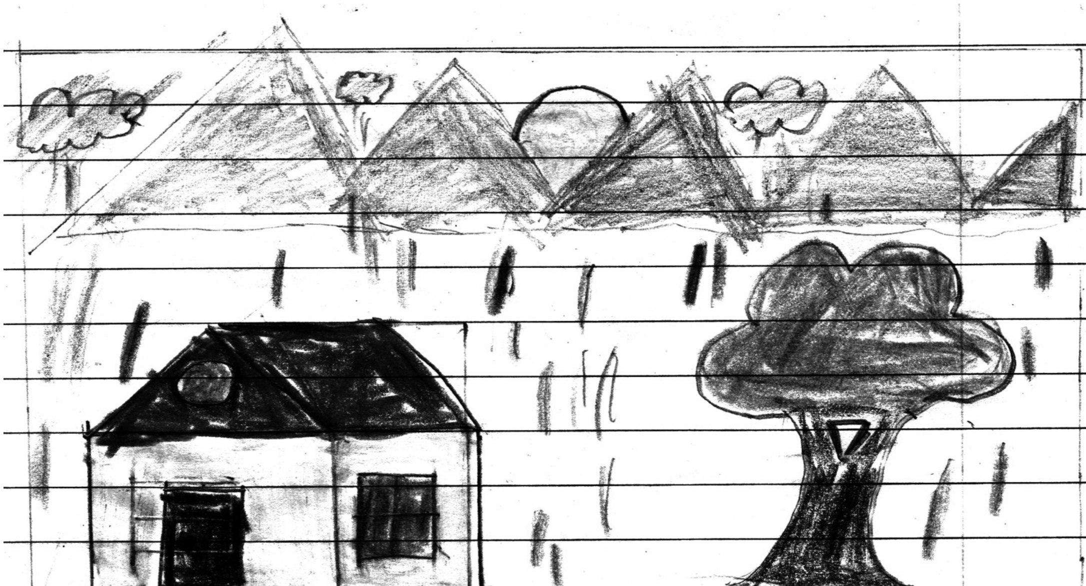

सवेरा

Vihaan Bharadwaj - IV A

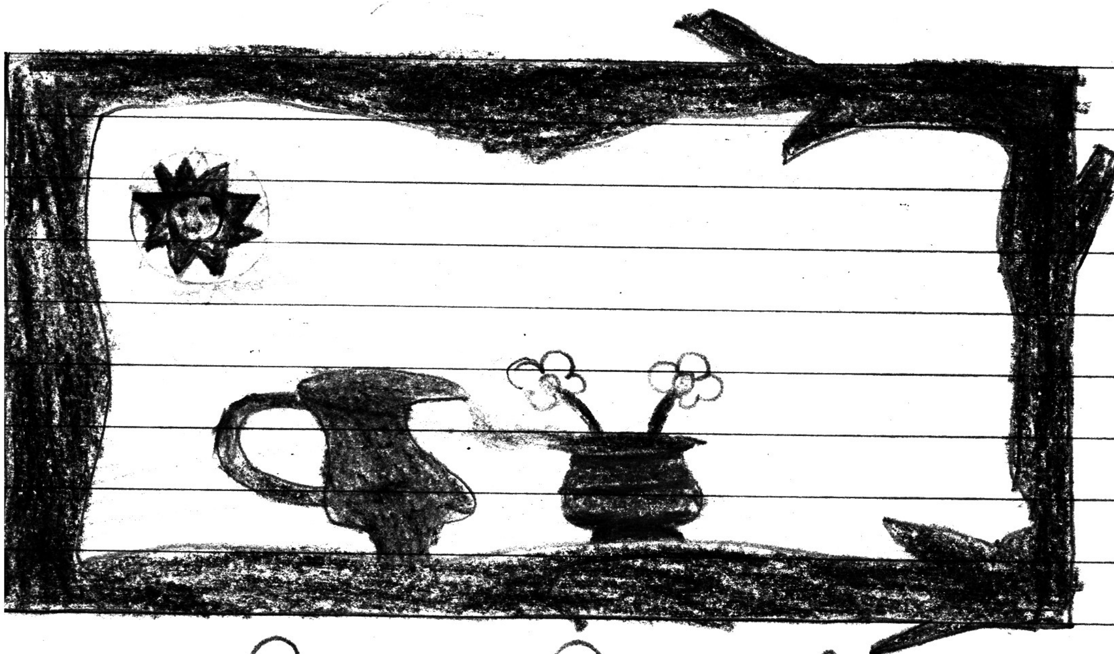

सूरज निकला मिटा अंधेरा,
देखो बच्चों हुआ सवेरा।
आयी मीठी हवा का फेरा,
चिड़ियों ने फिर छोड़ा बसेरा।
जागो बच्चो अब मत सोओ, इतने सुन्दर समय न खोओ।

जादुई कटोरा

कामिल रजा IV

एक बार कि बात है एक किसान जिसका नाम मोहन था जो बहुत गरीब था।

रोज कि तरह मोहन काम कर रहा था तभी उसे एक कटोरा दिखा जो चमक रहा था, उसने सोचा कि इसे बेचकर बहुत पैसे कमा सकते है पर दुकानदार ने सिर्फ पच्चीस रुपये देने को तैयार था पर फिर भी मोहन ने उस कटोरे को बेच दिया।

अगले दिन वह कटोरा मोहन के घर मे मिला। मोहन को लगा कि दुकानदार खुद रख कर चला गया होगा उसने उस कटोरे मे जैसे ही कुछ पैसे डाले तभी वह दुगुना होगया पर ये सब उस दुकानदार ने देख लिया और झगड़ने लगा

कि वह मेरा है पर किसन ने अपना दिमाग दौड़ाया कि अगर मैंने तुम्हें ये बेच दिया था तो ये लो तुम्हारे पच्चीस कि जगह पचास रुपये और चले जाओ और मामला सुलझाया।

कुछ देर बाद वह दुकानदार चौरी करने मोहन के घर मे घुसा पर पुलिस ने देख लिया और उस दुकानदार को गिरफ्तार कर लिया।

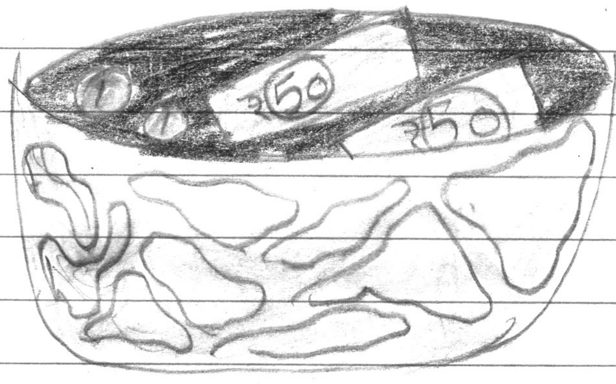

जादुई कटोरा

रे मामा रे मामा रे

Divyanshi Singh - IV 'A'

सुनो सुनाती हूँ एक कहानी
ना रुठो गुड़िया की रानी।
रे मामा रे मामा रे
रे मामा रे मामा रे
रे मामा रे मामा रे
मैं तो गया था लेने को आलू,
मैं तो गया था लेने को आलू,
आलू वालू कुछ ना मिला पीछे
पड़ा भालू।
आलू वालू कुछ ना मिला पीछे
पड़ा भालू।

रे मामा रे मामा रे
रे मामा रे मामा रे
रे मामा रे मामा रे
मैं तो गया था लेने को रोटी
मैं तो गया था लेने को रोटी
रोटी वोटी कुछ ना मिला पीछे
पड़ी मोटी,
रोटी वोटी कुछ ना मिला पीछे पड़ी
मोटी।
रे मामा रे मामा रे
रे मामा रे मामा रे
रे मामा रे मामा रे

तितली पर कविता

Aadila Fahim-IVA

तितली रानी बड़ी सयानी
फूल-फूल पर जाती है
फूल-फूल से रंग चुराकर
अपने पंख सजाती है
जब उसे जाओ पकड़ने,
पकड़ नहीं फिर आती है।
झट से उड़ जाती है।

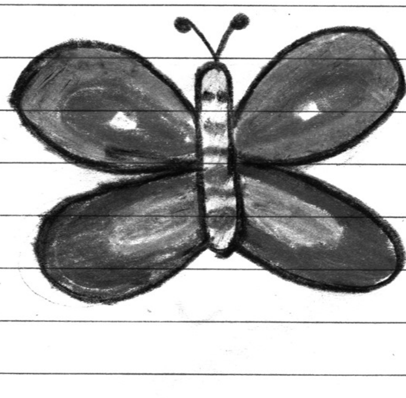

क्रिकेट

Ansh Raj - 4A

पाँव में जूता, सिर पर हैट,
हाथी लेकर निकला बैट, पेड़
पेड़ को विकेट बनाया, फिर
क्रिकेट का खेल जमाया। लगातार
दो शतक बनाया। अपने टीम
को जीत दिलाया।

धरती

अनमोल अध्यन श्रीवास्तव, IV A

धरती हमे बनाती जी
हमे खाना खिलाती जी,
छोटे से बड़ा बनाती जी,
पूरी दुनिया दिखाती जी,
हमे खुश रखती जी,
हम हमेशा उसको सताते,
लेकिन वो हमें हँसाती,
हमे खाना खिलाती जी,
हमे खुश बनाती जी,।
धरती हमें बनाती जी।

किताबें

Paras brakhar-4A

किताबें हैं मित्र हमारी
किताबें हैं मित्र हमारी
सिख दे ये सबसे प्यारी
काहानियाँ ये खुब सुनाती
ज्ञान कि दुनिया मे ले जाती
हर एक बात बताती
अच्छा बुरा हमे सिखलाती
जब हम अकेले होते हैं
संग किताबें रहती हैं
कभी हसाती कभी रुलाती
नयी-नयी बातें सिखलाती
चलो हम किताबो से दोस्ती करें।

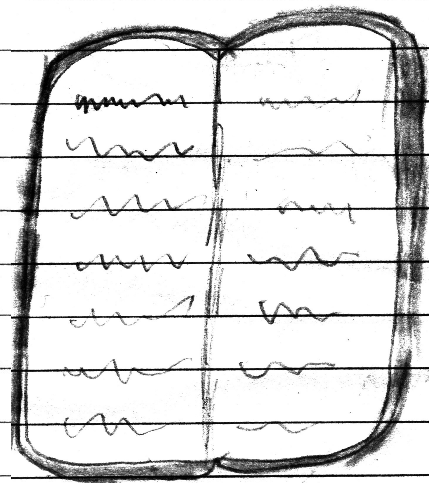

शब्दों की जुबानी: हमारी कविता, हमारी कहानी

Myra Mishra-4A

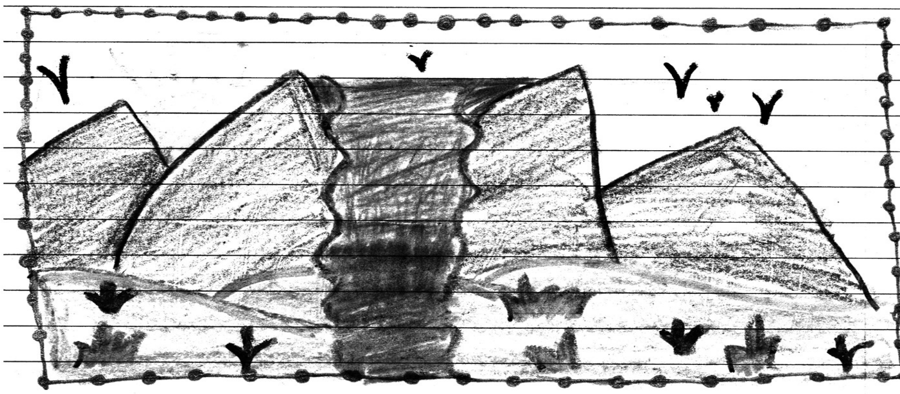

यह दुनिया किसने बनाया,
रंग-बिरंगे फूल खिलाया।
वन उपवन बगिया वन सुंदर,
हर दिल में समाया।

भुरा-भुरा पर्वतों के उपर
से, झरना गीत सुनाये।
वन उपवन नदी कलरव से,
सातों रंग बनाये।

यह दुनिया किसने बनाया,
रंग बिरंगे फूल खिलाया।

जोकर

Ishita Raj, 4 Alpha

तरह - तरह के खेल दिखाए,
जोकर सबका मन बलहाए।
ऊँची टोपी लम्बी नाक,
सबसे करता हँसी मजाक।
नाचे खूदे धूम मचाए,
सब बच्चों को खूब हँसाए।

प्यासा कौआ

आशीष, चार बीटा

प्यासा कौआ पानी ढूँढते हुए,
एक जगाह पहुँचा.
जहाँ गाड्डे में पानी था,
उसने पानी पीने की कोशिश की,
पर उसका चोंच वहाँ नहीं पहुँच रहा था,
उसने सोचा की वह,
उसमें पत्थड़ डालु तो क्या होगा?
उसने पत्थड़ डाला तो पानी थोड़ा ऊपर आ गया,
उसने और पत्थड़ डाला तो पानी ऊपर आ गया,
तो उसनी पानी पी लीया।

एकता में बल है।

नीरजा 4 'बी

एक बार की बात है "नंदन" नाम के एक गाँव में एक लड़का रहता था उस लड़के का नाम - "राजू" था।

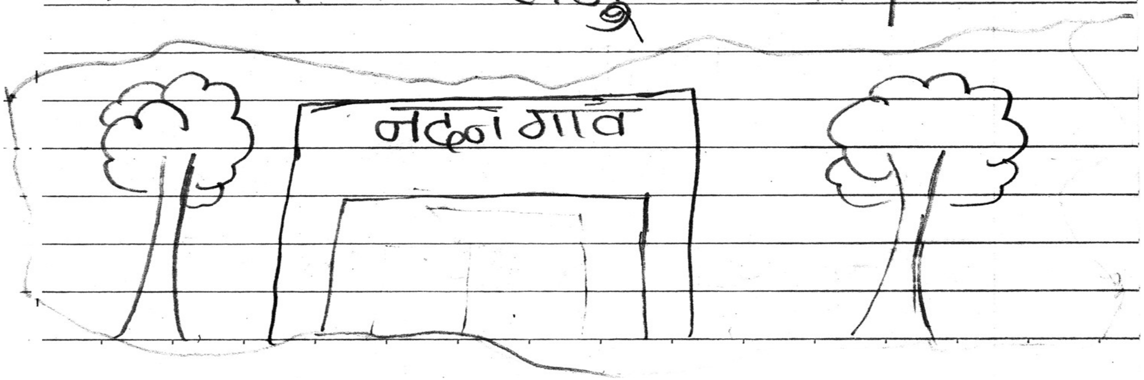

वह सात साल का था और, उसके भाई-बहन भी थे। एक दिन राजू के पापा दुकान से लौटे तभी राजू ने कहा "पापा आप कहाँ गए

थे" पापा ने कहा कि "मैं अपने
दोस्त "नमन" के दुकान
में मदद कर रहा था" राजू
ने बोला "पापा आप उनकी
मदद क्यों कर रहे थे?
तभी पापा ने बोला "आज
नमन को कोई जरूरी
काम से बाहर जाना था
वो भी जल्दी" राजू ने
कहा" वो काम तो नमन
चाचु भी तो कर सकते
थे" पापा ने कहा "बेटा अगर
कोई भी काम अगर मिल

-कर करे तो काम जल्दी
और आसान हो जाता हैं,
कहते हैं न बेटा कि "एकता
में बल है। राजू ने कहा
"तो पापा मैं भी अपने
भाई-बहन के साथ मिलकर
काम करूँगा जिससे मेरा
और मेरे भाई-बहन का
काम आसान हो जाएगा

इसलिए कहते है की "एकता
मे बल है।"

प्यासा कौआ

आरिफा अब्दुल करिम · IV 'ब'

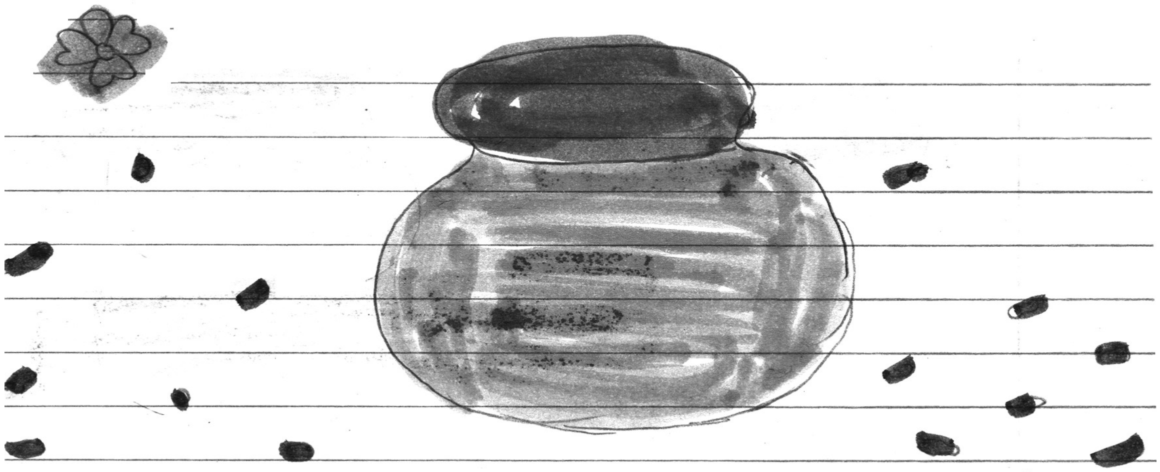

एक बार की बात है, एक जंगल में एक बड़े से पेड़ पर एक कौआ रहता था। एक दिन जब वो पेड़ पर बैठा था। तभी उसे बहुत प्यास लगी। वो उड़ते-उड़ते गया पानी की तालाश में। गरमी बहुत ज़्यादा थी, तो वह थक गया, और अब उसमे उड़ने की ताकत नहीं बची। थोड़ी ही देर में वह ज़मीन पर उतरा। उसकी हालत खराब हो चुकी थी, तभी उसे एक लड़की ने देखा, उसे उठाया और अपने घर ले गई उसे खाना खिलाया और एक प्यार से घड़े में पानी पिलाया। वो कौआ अब रोज़ उस लड़की के घर खाने-पीने आता। वो अब खुश रहने लगा।

प्यासा कौआ

Alham, 4 B

एक कौआ प्यासा था,
नदी किनारे भटक रहा था।
भटकते-भटकते प्यास लगी।
पास में एक घड़ा दिखा,
पास उसके जा पहुँचा।
घड़े में पानी कम था,
तभी उसे एक तरकीब सूझी,
पास में कुछ कंकड़ दिखे।
उसने एक कंकड़ उठाया,
घड़े में कंकड़ डाल दिया।
फिर पानी उसने खूब पिया।

चालाक लोमड़ी

शनाया यादव- 4'B

एक जंगल का राजा शेर था। उसे के दो मंत्री थे एकचिता और एक बाघ। उस जंगल में एक लोमड़ी भी रहती थी। शेर बहुत आलसी था। एकदिन नदी में दो मगरमछ आ गये। तो सारे जानवर भड़क के लिय आये ते लोमड़ी ने कहा की मेरे पास एक उपाय है पर उस के लिए मेरी बात माननी पड़ेगी। शेर ने हाँ कहीं। तो लोमड़ी ने कहा की बरसात आने वाली है अगर हम एक बड़ा सा गड्ढा खोदेंगे तो उस में पानी भर जायेग और फिर हम आराम से पानी पि सकते है। सारे जनवर गड्ढा खोद ने लगे। जब बारीश आई तब नदी भर गई तो जानवर पानी पिने लगे तो लोमड़ी ने कहा पानी पीना है तो टैक्स भरे एक दिन बगुला पानी पिने आया तो उस ने टैक्स नहीं भरा तो लोमड़ी ने उसे मार दिया।

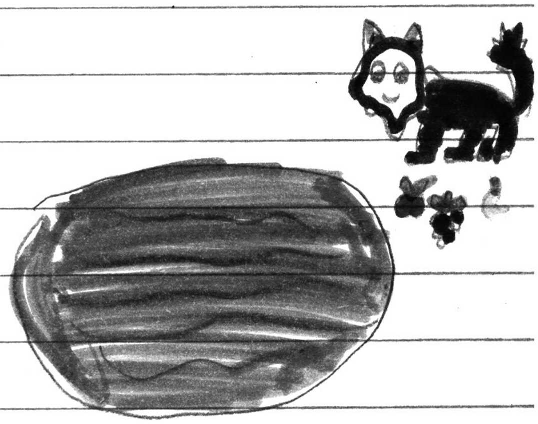

प्यासा कौआ

फिज़ा फातिमा - IV Bela

एक बार की बात है। एक जंगल में मुझे एक प्यासा कौआ दिखाई दिया। उसके पास एक घड़े में पानी था लेकिन पीता नही था, मुझे लगा की उसका मन नही होगा पानी पीने का। एसे हररोज चलता रहा एक दिन मुझे लगा की इसकी दिक्कत क्या है? जब मैंने देखा तो वह पानी इसलिए नहीं पी रहा था क्योंकि उसके घड़े का पानी गंदा और सड़ा हुआ था। और थोड़ा-सा था। तो मैंने उसके घड़े को साफ करके

उसमें साफ़ पानी डाला और तबसे मैं अपने घर के बॉलकोनी में एक घड़ा मे पानी रखने लगी इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें पशु - पक्षी की मदद करनी चाहिये !

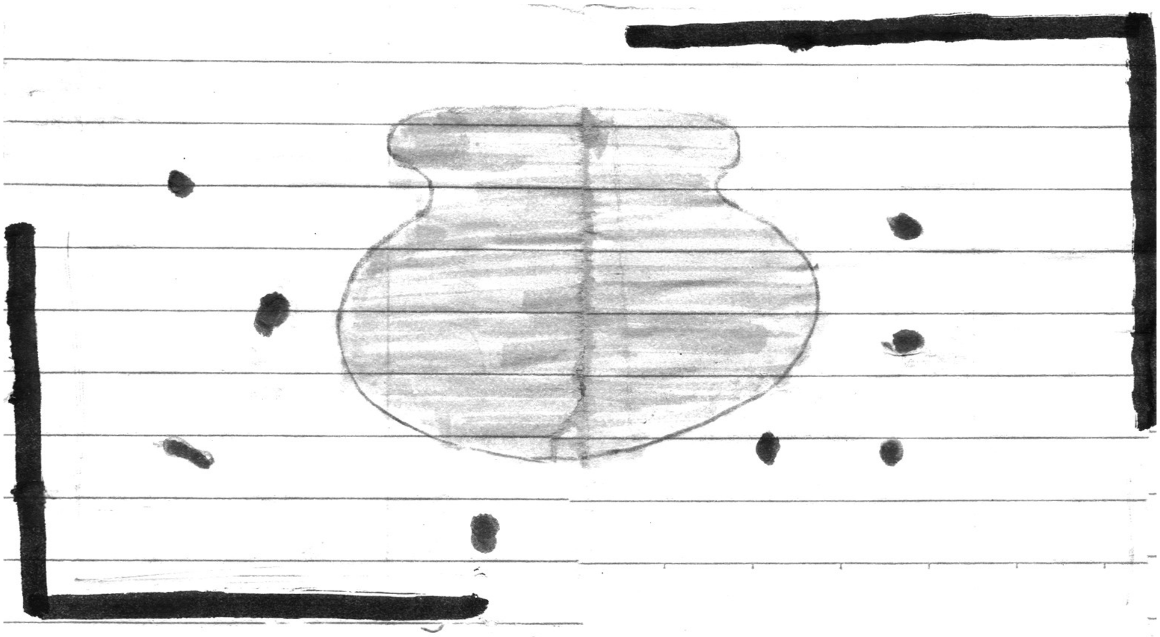

पशु - पक्षी की मदद करें !
उनकी बात समझो !

एकता में बल

कल्याणी अर्पी, 4 Beta

कुछ सालों पहले, एक राजा
अपने राज्य के साथ खुशी-खुशी
रहता था। फिर पाँच महीनों के बाद
उसको चिंता होने लगी की अगर
मैं मर जाऊँगा, तो मेरा राज्य
कौन चलाएगा। तो उसने एक योजना
बनाए की 'सारे पुरुष मैदान में
कल शाम 6 बजे जमा होंगे"
ठिक कल शाम 6 बजे 100 पुरुष
वहाँ पर आगए। राजा ने सबको
एक-एक गमला दिया और कहा

कि जिसका फूल सुंदर होगा वो राज्य का राजा बनेगा। दो महिनों के बाद राजा ने सबको बुलाया सबके पौधे सुंदर थे पर एक लड़का रोहन उसका पौधा वैसे का वैसा। राजा ने यह देखा और बोला रोहन हि राजा बनेगा क्योंकि रोहन ने पौधा नहीं बदला और सारे बिज खराब थे उसे फूल नहीं निकलता।

एकता में बल है

सुनिधि सिन्हा : 4

कुछ समय पहले 4 बहने रहा करती थी। वह बहुत झगड़ा किया करती, उनके माता-पिता उन्हें बहुत समझाते की वह लड़ाई न करें, पर वह समझती ही नहीं। एक दिन उनमें से एक बहन जो सबसे बड़ी थी उसका पैर उसकी छोटी बहन से फँस गया जिसके कारण वह गिर पड़ी और उसे गहरी चोट आ गई और उसकी छोटी बहन उसके ऊपर हँसने लगी जिसके कारण उसे गुस्सा आया और उसे थप्पर लगा दिया, उसके माता-पिता उनसे बहुत परेशान थे, उसके पिता ने एक

योजना बनाई और उन्होंने सारी बहनों से दो-दो लकड़ियाँ मंगवाई जब वह लकड़ियाँ लेकर आई तो उसके पिता ने एक-एक लकड़ी माँगा और बोला "इस एक लकड़ी को तुम तोड़ दो, पर पिता जी हम इस लकड़ी को क्यों तोड़े?" "तुम तोड़ो तो सही।" बहनो ने लकड़ी तोड़ दि और उनके पिता ने पूछा "क्या ये लकड़ी आसानी से टूट गई" बहनो ने कहा "हाँ" फिर पिता ने बाकी चार लकड़ियाँ को बाँध कर हर एक को तोड़ने का मौका दिया। पर वह लकड़ी किसी से नहीं टूटा उसके पिता ने कहा "कुछ समझे? हाँ पिता जी हम समझ गए" क्या? की एकता मे बल है। अबसे 'हम सब प्यार से रहेंगे।"

प्यासा कौआ

मानसी रानी, 4 B

एक गांव में बहुत गर्मी थी। एक कौआ प्यासा था। वह एक गाँव में गया उसे वहाँ एक मटका दिखाई दिया उसमें थोड़ा सा पानी था। कौआ का चोंच छोटा था इसलिए वह पानी नहीं पी सकता था। लेकिन उसे वहाँ पर कुछ गीटी दिखाई दी और वह गीटी देखी तो वह उसके पास गई और अपने चोंच में वह गीटी को लेकर मटका में डाल दी और धीरे-धीरे पानी ऊपर आ रहा था बार-बार कौआ गीटी डालती रही और पानी ऊपर आ रहा था। मटका में पानी ऊपर तक आ गया तो कौआ पानी पीकर चली गई।

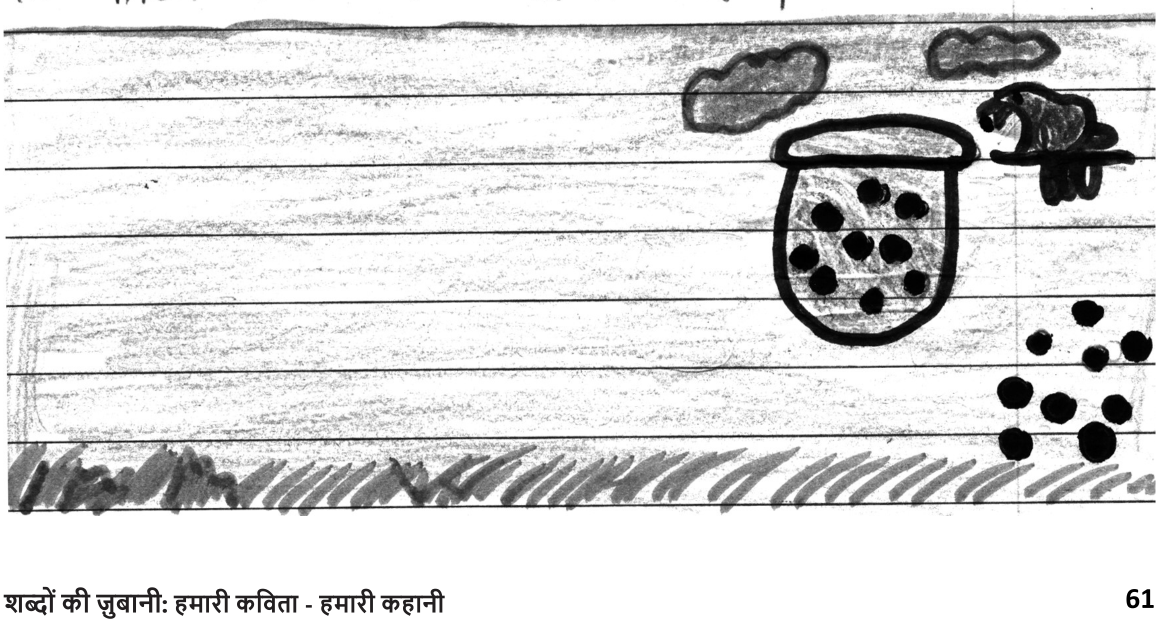

चालाक लौमड़ी

Sreestipriya IVB

एक बार की बात थी एक
चालाक लोमड़ी थी वह जंगल
में खाना तलाश रही थी तभी
उसे और कोयल को एक रोटी
दिखा कोयल रोटी के बहुत
नजदीक थी पर लोमड़ी दूर
कोयल ने रोटी झट से लेली
लोमड़ी उदास हो गई तभी उसे
एक तरकीब सूझी उसने कोयल
से बोला ओ कोयह रानी
तुम्हारी आवाज बहुत मीठी है
क्या तुम मेरे लिए एक गाना

गाती थी। कोयल सोची क्या
मेरी इतनी मीठी आवाज़ लोमड़ी को
पसंद आई कि उसने सोचा
इतना ही कह रहा है तो गाना
गा देती हूँ जैसे ही कोयल ने
अपना मुँह खोला तो कोयल
की मुँह में दबाई हुई रोटी नीचे
गिर गई और लोमड़ी उसे लेकर
भाग गई। इस कहानी से हमें
पता चलता है की हमें हमेशा
चलाकी से काम लेना चाहिए।

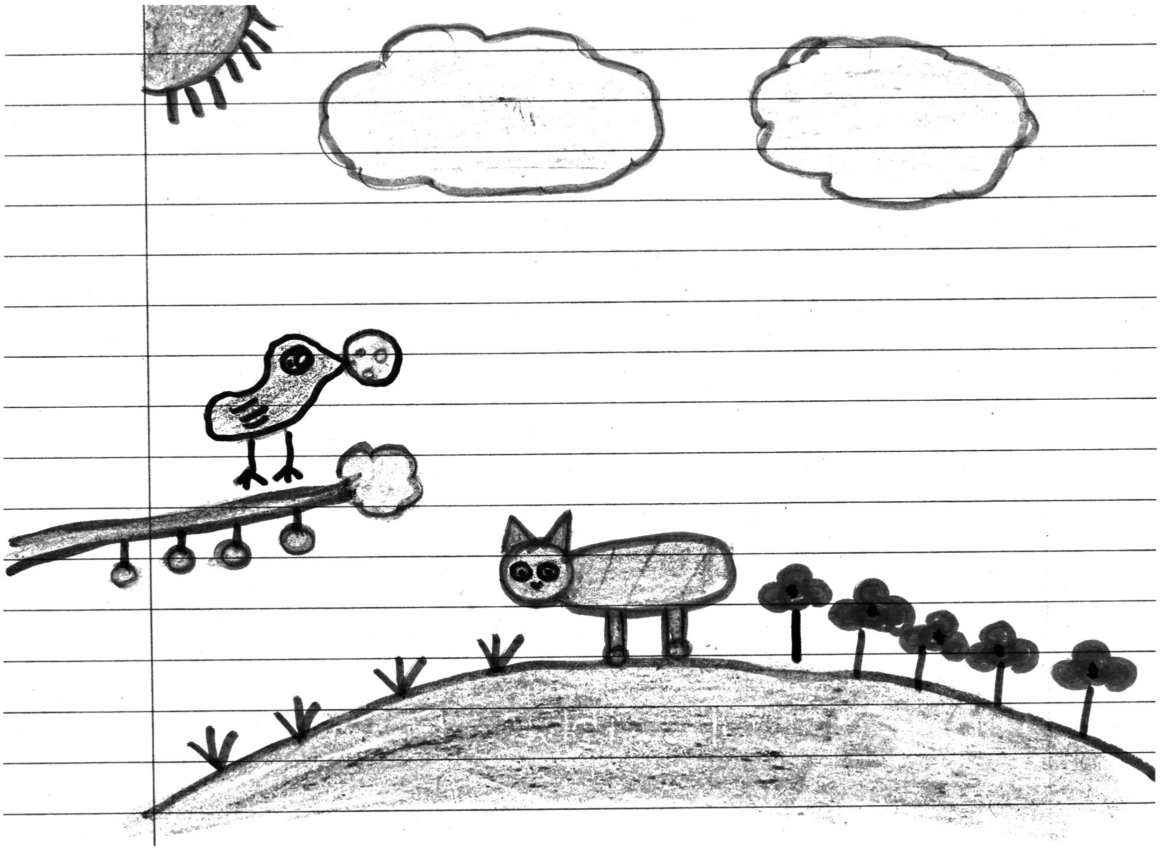

चालाक लोमड़ी

आरुषी कश्यप, 4

एक बार की बात थी एक गाँव में एक चालाक लोमड़ी थी वह जंगल में सारे जानवरों को मार कर के खा जाती थी। उसी गाँव में एक बहुत बड़ी-सी नदी थी। जीस में लोमड़ी हमेशा पानी उसी नदी से पीती थी। और उसी गाँव में एक बकड़ी और मेमना रहती थी। वह दोनों घास चर रही थी घास चरते-चरते उनको दोनों को प्यास लग गई मेमना बोली माँ चलो पानी पी आया हा चलो पानी पी आया दोनों चली पानी पीने दोनों नदी के पास आ गई। और दोनों पानी पीने लगी। तभी एक लोमड़ी आ गया बकड़ी और मेमना डर गए। वे दोनों ने एक योजना बनाई और बकड़ी ने बोली लोमड़ी से छी-छी... कितना गंदा मुँह है।

तभी लोमड़ी ने बोला अभी तो मुँह धोकर आया था रेत से फीर कैसे मुँह हो गया। फीर से मुँह धो ले हुँ। वह नदी में मुँह धोने चला गया नदी के पास जब वह धोने के लिए मुँह नीचे कीया की तभी बकरी और मेमना ने पूरी ताकत लगा कर उसे धका दे दी।

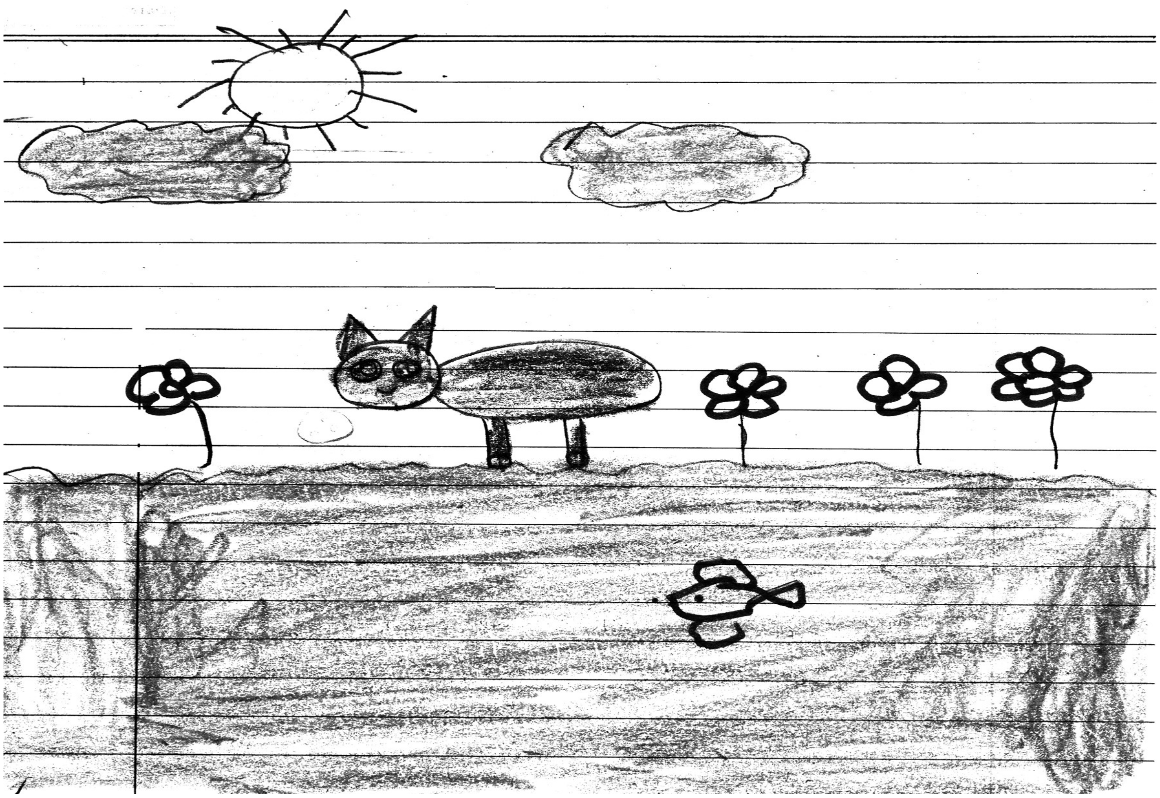

फूल

कुणाल, ५ अ

सूरज प्यारा चन्दा प्यारा,
हमको सबसे प्यारे फूल।
सारी दुनिया कोमहका दे,
लाओ न्यारे-न्यारे फूल।
तितली जैसी रंग-बिरंगी,
खिले हुए फूल।

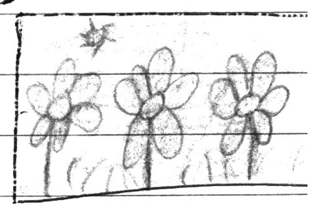

राहों में जगमगा करते हैं,
ये धरती के सारे फूल।
जहाँ प्यार है, जहाँ खुशी है,
वहीं बिखरे सारे फूल।

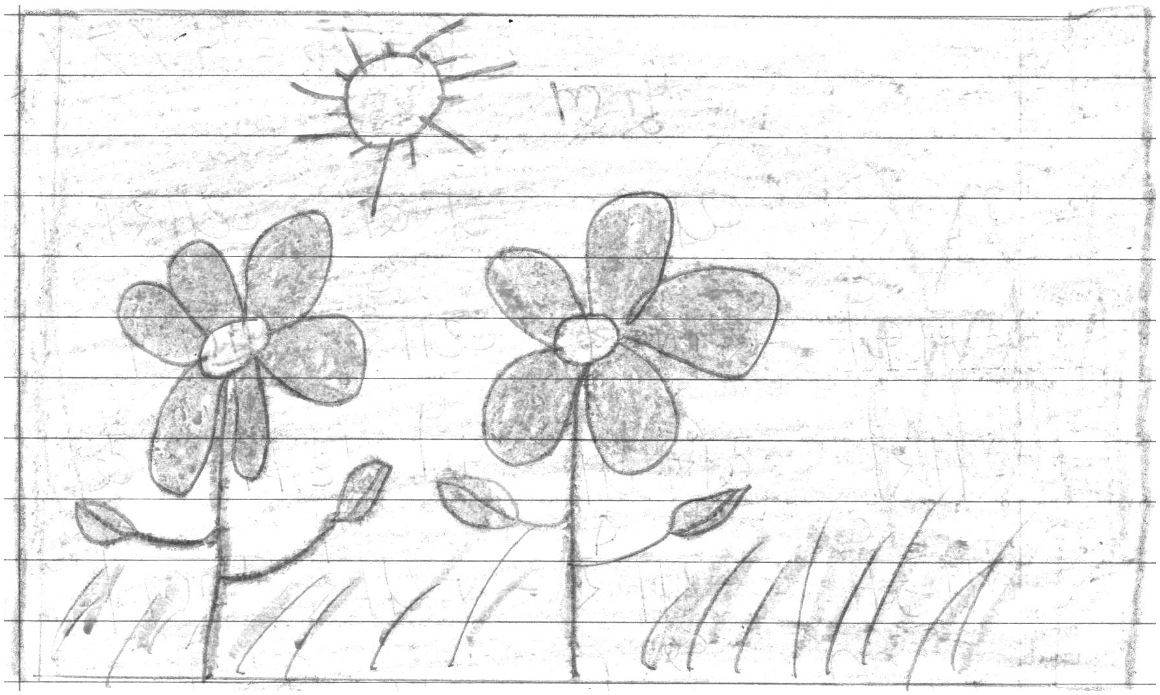

पानी की बचत

अवि प्रकाश, '5 A'

एक गाँव में एक अमन नाम का लड़का रहता था। अमन की माता का नाम अंजली था और उसके पिता का नाम रमन था। अमन का दोस्त था जिसका नाम राम था। वह बहुत लापरवाह था। एक दिन अमन और उसका दोस्त स्कूल जा रहे थे तभी उन्हें दिखता है कि किसी घर का नल खुला है। अमन बोलता है कि "चलो उस नल को बंद करने चलते हैं"। राम कहते हैं कि "हमें नल बंद करने की क्या ज़रूरत है। लेकिन अमन कहते हैं कि "मैं जा रहा हूँ बंद करने तुमको चलना है तो चलो। फिर अमन ने जा के नल बंद कर देता है। फिर वह स्कूल जा के इस चीज़ को बताता है और उसे पुरस्कार मिला।

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें पानी की बचत करनी चाहिए।

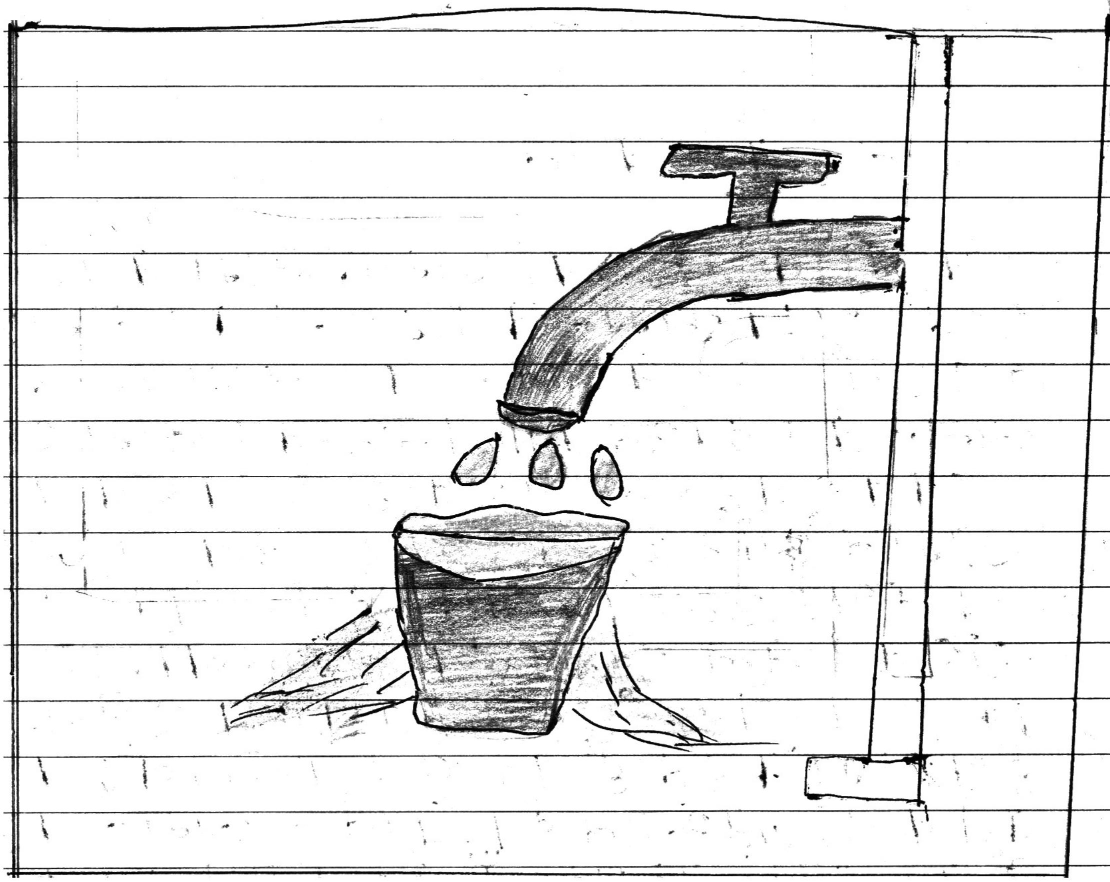

एक चिड़ियाँ

रुद्र राज, V Alpha

एक चिड़ियाँ थी उसके दो बच्चे थे उसके लिए वो खाना थी और एक भला आदमी उस चिड़ियाँ को उसके और उसके दो बच्चों के लिए खाना देता था। लेकिन एक दिन वो आदमी वहाँ नही था चिड़ियाँ को पता चला कि उस आदमी की मृत्यु हो गई तो वो भी भूख से तड़प-तड़प के मर गई।

एकता में बल है

सेजल वैष्णव - V 'A'

एक बार एक गाँव मे तीन मित्र रहते हैं। वे तीनों बहुत अच्छे मित्र थे। एक का नाम राम था, एक का नाम मोहन था और एक का नाम रोहन था। वे तीनो हर मुसीबत का सामना एक साथ मिलकर करते थें। एक दिन वे तीनों जंगल के रास्ते से जा रहें थे। तभी उन्हें झाडियाँ हिलती हुई दिखाई दी। झाडियों के पीछे से एक शेर निकला। वे तीनों बहुत डर गए। तभी राम को एक सुझाव आया। उसने सोचा की हम तीनों पेड़ पर चढ़ जाते हैं लेकीन राम को पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था। शेर पास

आ रहा था। रोहन और मोहन पेड़ पर चढ़ गए और बोला "राम जल्दी आओ शेर पास आ रहा है।" राम ने बोला "मुझे पेड़ पर चढ़ना नहीं आता है।" रोहन और मोहन जल्दी पेड़ से उतरे और राम की मदद की पेड़ पर चढ़ने में। उसके बाद जल्दी से वे दोनों भी चढ़ गए। उनको देखकर शेर चला गया क्योंकी उसे पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था। फिर वे तीनों पेड़ से उतर कर वहाँ से चले गए। उन तीनों ने यह साबित कर दिया की एकता में बल है।

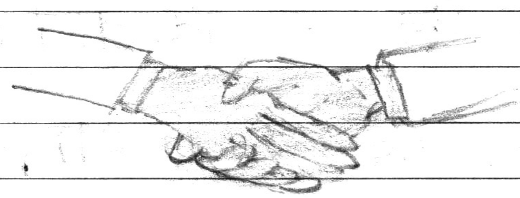

पुस्तक

हर्षिता रॉय - V 'अ'

मेरी पुस्तक रंग - बिरंगी,
कहे कहानी यह सतरंगी।
कहती बातें नई पुरानी;
जैसे बोलें दादी - नानी।
परीलोक की सैर कराती,
कभी - कभी वो हमें डराती।
कभी हँसाती कभी रुलाती,
दुनिया की हर बात बताती।

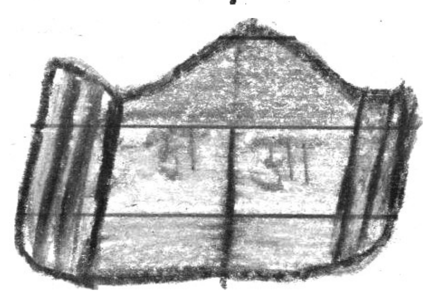

गरमी के दिन

शानज़ा फातिमा - V A

गरमी के दिन आते हैं,
हमको बहुत सताते हैं।
कहाँ खेलने जाएँ हम ?
इतनी धूप कि निकले दम।
खेलों का मैदान गरम,
लू को आती नहीं शरम।
बाहर खेल न पाते हैं,
मन - ही - मन झुँझलाते हैं।

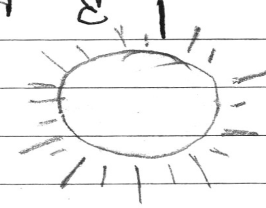

मदद

शानज़ा फातिमा - V A

एक गाँव में रिया नाम की एक लड़की रहती थी। उसी गाँव में एक मीना नाम की लड़की रहती थी। वह दोनों एक ही विद्यालय में पढ़ते थे, लेकिन मीना बहुत गंदी बच्ची थी वो हमेशा दूसरों को परेशान करती थी। रिया बहुत ही शांत स्वभाव तथा दूसरों कि मदद करती थी। उसके इसी स्वभाव के कारण सभी शिक्षक तथा शिक्षिकाएँ उसे पसंद करते थे। रिया के उसी गुण के कारण मीना उससे ईर्ष्या एवं द्वेष का भाव

रखती थी। एक दिन विद्यालय में
वार्षिक उत्सव था मीना ने दौड़
प्रतियोगिता में भाग लिया था,
दौड़ने के क्रम में मीना लड़खड़ा
कर मैदान में गिर गई जिसके कारण
उसके हाथ और पैर में चोट लगी थी।
यह सब देखके दूर रिया तुरंत दौड़कर मीना
के पास आई तथा प्राथमिक उपचार बॉक्स
से घाव को साफ़ कर पट्टी बांधने
लगी। यह देखकर मीना भावुक होकर
रोने लगी तथा रिया को गले लगा
लिया।

अंततः मदद करने वाले हमेशा अपनी अपने जीवन काल में दूसरों की खुशी में ही अपनी खुशी खोजते हैं।

सच्चा बालक

आदित्य श्रीवास्तवा - 5 A

एक बार की बात है एक गाँव में एक लड़का रहता था। वह कभी झूठ नहीं बोलता था और उसके उसके पास कोई दोस्त नहीं था फिर एक दिन उसे गाँव में एक लड़का दिखा, वह उसके पास गया और उसने कहा तुम मेरे दोस्त बनोगे तो फिर वह सोचने लगा, फिर उसने सोचा इसका दोस्त बन ही जाता हूँ। फिर उसने बोला, चलो मैं तुम्हारा दोस्त बन ही जाता हूँ पर उसे नहीं पाता था कि यह बहुत ज्यादा झूठ बोलता था सच्चा बालक खुश हो गया और फिर सोचने लगा चलो कोई तो मेरा दोस्त बना। फिर वह दोनो खलने लगे फिर बहुत दिन बीत गए फिर सच्चा बालक का दोस्त उसे भी धीरे-धीरे झूठ बोलना सीखाने लगा पर सच्चा बालक झूठ बोलने से उसे मना करने लगा। फिर उसके दोस्त ने कहा कि तुम झूठ बोलोगे तो तुम्हें मार नहीं खाओगे वह सुनके सच्चा बालक मान गया फिर वह झूठ बोलने लगा फिर एक दिन उसकी माँ ने उसे झूठ बोलते पकड़ लीया और फिर उसे अपने घर से निकाल दिया इसलिए कहते है कि हमे झूठ नहीं बोलना चाहिए।

सच्चाई का राह

आईशा ईज़ास - 5 'A'

झूठ की डगर बड़ी आसान पर मंजिल
उसकी खोखली,
सच की राह भले कठिन हो, पर है वो
अनमोल चली।
धोखे से जीत मिल जाए तो, दिल को भाता है।

मुसीबत में जो सच बोले, वही आसली
वीर है।
झूठ के पीछे भागे जो, अंत में वो ही
अधीर है।
सच्चाई की ताकत आता हर ओर
छा जाता
जो सत्य के संग में चलता वही असली
इसांन कहलाता है,

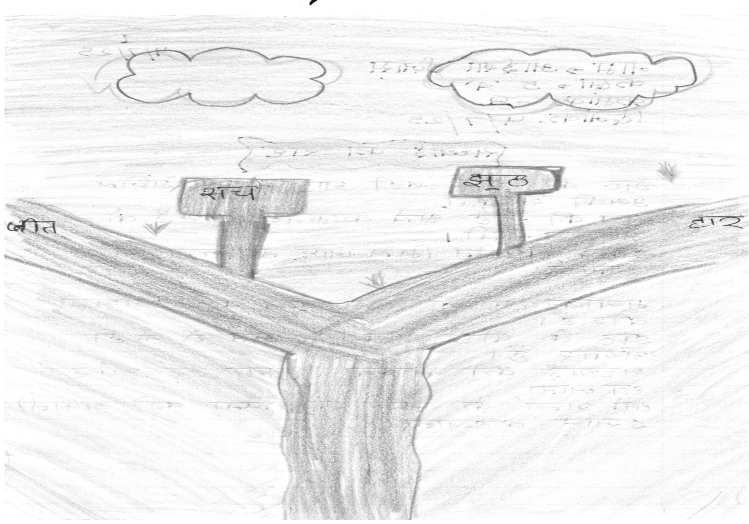

एक चिड़िया की समझदारी

ईशिता - 5 'A'

एक बार एक छोटे-से गाँव के जंगल में एक-छोटी सी चिड़िया रहती थी। वह जब छोटी थी, तब वह अपने माता-पिता से अलग (बिछड़) हो गई थी। उसे खाना और पानी ढूंढने में बहुत परेशानी होती थी, और बड़े पशु-पक्षी उससे खाना छीन लेते थे। पर वह कुछ नहीं करपाती थी। एक दिन उसे एक तरकीब सूझी। उसने सोचा कि वह कुछ सीखेगी। उसने एक लड़के को अखबार बोलते हुए देखा जैसे ही दूसरा घर आया, उस चिड़िया ने अखबार

को अपनी चोंच में पकड़ कर उसने उस

घर में डाल दिया। वह लड़का ये देख

कर बहुत प्रसन्न हुआ। उस लड़के ने चिड़िया

को करतब के लिए बहुत अच्छे से तैयार

किया और जब नाटक का दिन आया

तो चिड़िया ने अपने करतब अथवा नाटक से

सबको प्रसन्न कर दिया। उस दिन के बाद

से वह काफी ज्यादा मशहूर हो गई।

यह कहानी बताती है कि अगर कोई कुछ

ठान ले तो वह कुछ भी कर सकता है।

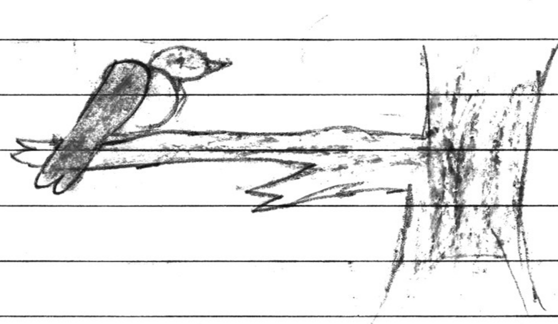

एक चिड़िया

प्रिंस कुमार - पाँच A

एक चिड़िया डाल पर बैठी हुई थी। उसे कौआ ~~प्र~~ से डर लगता था। एक दिन वह उड़ कर कहीं जा रही थी। तब उसे एक शिकारी दिखाई दिया। वह बहुत सारे कौआ का शिकार करने आया था। उसने एक-एक कर के सारे कौआ को पकड़ कर ले जाने लगा तब चिड़िया चूहों के पास गई और ~~उसने~~ उनसे बोली की शिकारी कौआ को ले जा रहा है। तब चूहे बोले

की चलो हमें शिकारी के पास
ले चलो तब चूहों ने छुपकर
जाल अपने नुकीले दाँतों से
काटकर कौआ को आजाद कर
दिया। वहीं एक शेर आया और
शिकारी को मार कर खा गया
और शिकारी को खा कर शेर
वहाँ से चला गया तब
चिड़िया का डर खत्म हो
गया और चिड़िया और कौआ
में दोस्ती हो गई।

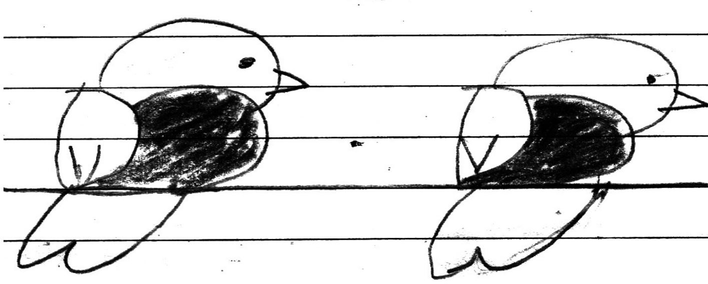

~बचपन~

अलवीना हुसैन -V (A)

ये बचपन की यादें जब आती हैं,
मन के बच्चे को फिर जगाती है।
हँसते-खेलते वह सुनहरे पल नये,
आज से सुन्दर पुराना कल वो रुनझुन,
ध्वनि हवा का रुखभी चुनना तिनका- तिनका
सूखा।

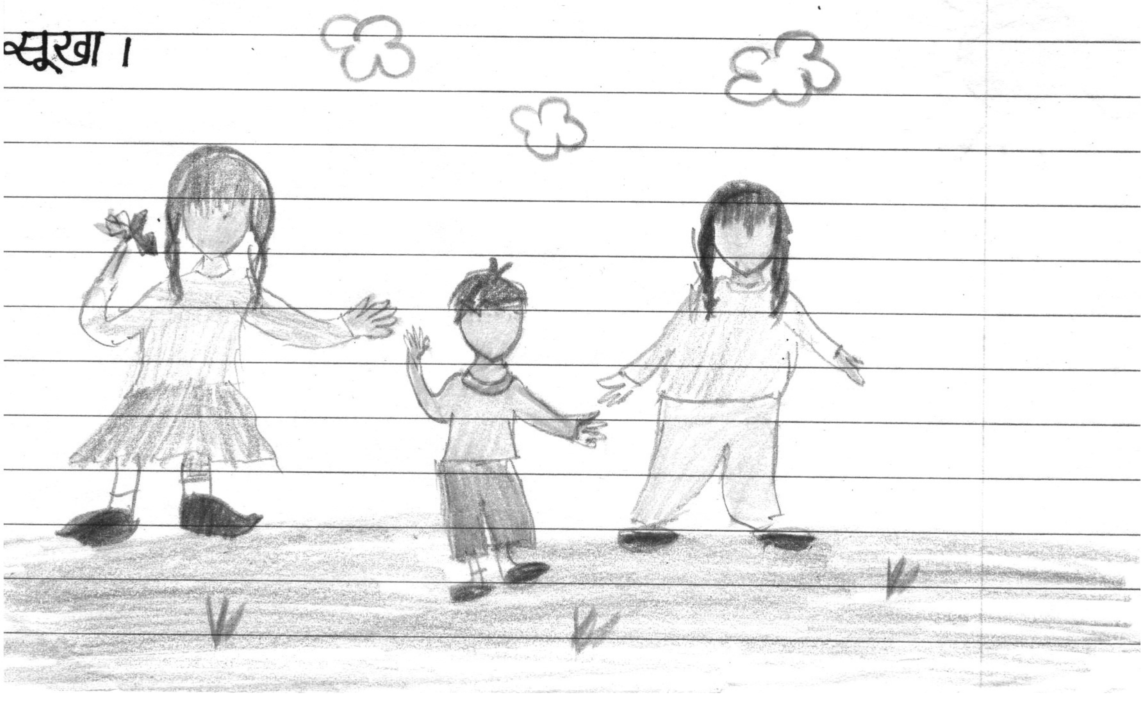

पेड़

वेदांत सिंह-पू 'अ'

पेड़ हमारे जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। इनसे हमें ऑक्सीजन और छाया मिलती है। पेड़ बारिश को भी बुलाते हैं। पेड़ों के फलों, पत्तों और सब्जी को खाने के रूप में खाया जाता है।

पेड़ भी अपना खाना खाते हैं। वे सूरज की किरणों, हवा, पानी और पत्तों के हरेपन से अपना खाना बनाते हैं। पेडों की लकड़ियाँ फर्नीचर में भी इस्तेमाल होती हैं। इन लकड़ियों से घर और मंदिर बनाया जाता है।

फिर भी पेड़ों के बारे में जितना कहें उतना कम है। पेड़ों की हमारे जीवन में बहुत ज़रूरत होती है।

Rishi Dhanraj - 5 A

गुलमोहर का पेड़

गुलमोहर का पेड़ लगाया है।
मैंने जो आँगन में। नन्हा-सा
लाये थे पापा इसको मेरे जनम
दिवस पर इसको मेरे जनम
दिवस पर पाला पोशा मैंने
इसको पानी खाद दीया जमकर
अब मुझसे भी बड़ा हो गया।
देखो यह आँगन कानन में
घमडो - घनटो इसकी सीतल
छाया मे पढ़ शकता व चाहु
तो मैं झूला - झूलु इसके
ऊपर सावन में

कविता

समृद्धि शर्मा, 5B

आया रे भाई आया पंद्रह अगस्त आया
आजादी के अवसर पर हमारा झंडा लहराया।
माँ बहनों की माँगे सुनी हुई,
पिता पुत्र की हुई जुदाई।

अनेकों वीरो ने जान गँवाई,
तब जाके आजादी पाई।
आजादी को पाने में,
सभी धर्म मिल जाते हैं।

केशरि, सफेद, हरा ये तीनों अंग झंडा की शान,
क्रांति कारी वीरों ने रखी इसकी आन।

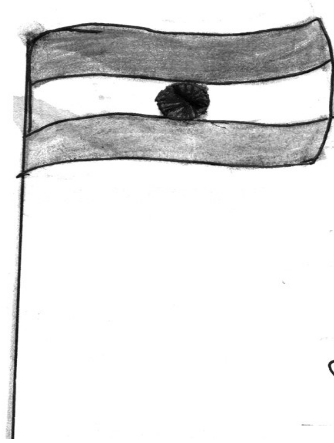

मेरा भारत
महान था
महान है
महान रहेगा

आज़ादी का पर्व

Sanskriti singh - 5B

पंद्रह अगस्त का दिन आया,
भारत माँ का मान बढ़ाया।
वीरों ने दी अपनी जान,
तभी मिला यह सुंदर गान।

यह दिन है बलिदानों की याद,
सदा रखेंगे हम ये ~~फरि~~याद।
झंडा ऊँचा लहराए,
आज़ादी का गीत सुनाए।

हम बच्चे हैं देश की शान,
रखेंगे ऊँचा हिंदुस्तान।
भारत माँ का शीश उठाए,
और तिरंगा लहराए।

जय हिंद!

जय भारत!

ईमानदार लड़का

सूर्यकांत पाल- 5B

एक समय कि बात है,
एक गाँव में ~~ब~~ एक लड़का
रहता था। उसका नाम अरजुन
था। वह एक दुकान में समोसा
बेचता था। उसके समोसे बहुत
स्वादिष्ट थे। दुर-दुर से लोग
उसके समोसे खाने खाने आते
थे। जिससे वह अपनी माँ के लिए

दवाईयाँ खरिद लेता था।
उसकी माँ को गम्भिर बिमारी थी।
ईसलिए वह बहुत मेहनत करता था।
एक दिन बहुत अमीर आदमी
आया। उसने कहा कि मुझे
10 Kg समोसे दे दो। अरजुन
ने उसे समोसे दे दिए। ~~अमिर~~
अमीर आदमी ने पैसे दे दिये और
समोसे लेकर चला गया।
अरजुन ने देखा की आदमी
ने ~~आदमी~~ उसे पैसे जयादा दे दिए है।
तो वह अमिर ~~आदमि~~ आदमी
के पिछे जाकर कहा कि उसने

~~ज्या~~ ज्यादा पैसे दे दिये थे।

तो आदमी ने कहा कि यह

पैसे रख लो क्योंकि यह

तुम्हारे ईमानदारी के पैसे हैं।

~~फि~~ फिर अरजुन खुशी-खुशी

~~च~~ चला गया।

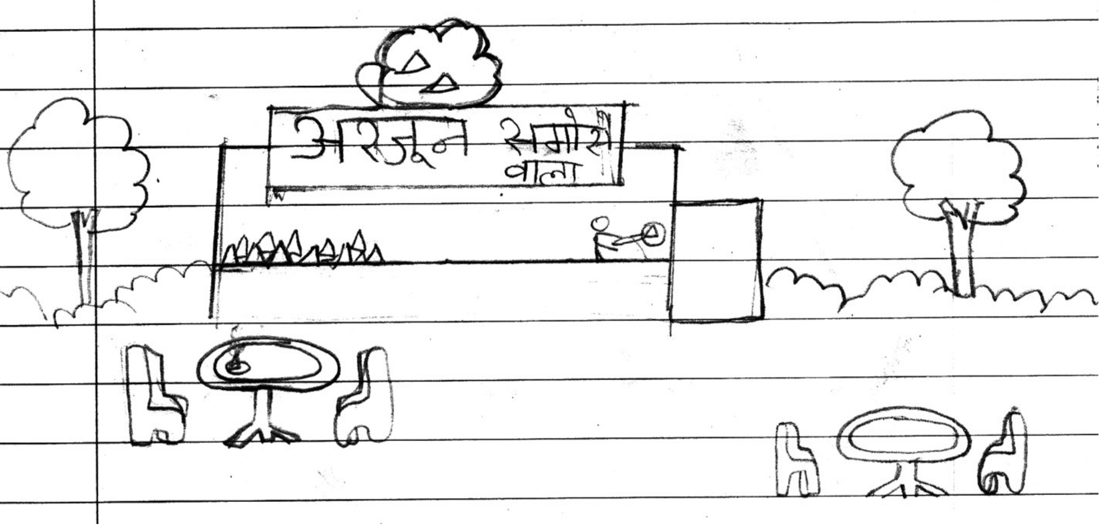

शब्दों की जुबानी: हमरी कहानी

Darsh - 5 Beta

एक चिड़िया थी। वह मेरे घर के छत पर रहती थी। उसका नाम मैंने मोहनी रखा। वह हर सुबह मे खिरकी पर बैठ कर चि-चि करती था। उसे जब भुक लगती वह मेरी मा के पास चली आती। मेरी मा उसे दाना खिलाती। मेरी मा उसके लिए हर सुबह 4 बजे खिरकी के आगे खाना रख देती। उसने अपने मे तिन अण्डे दिए एक बच्चे को साप खा गया। दो अनडो से बच्चे निकले। मेरी मे अब तिन चिड़ा को खाना देने लगा।

जब दौनौ बचे बरे हो गाए तब चिड़िया
दौ बचौ कौ ले कर उर की कभी-कभी
वह अपने दौनौ बचौ कौ लेकर से खिरकी
पर बैठ जती थी।

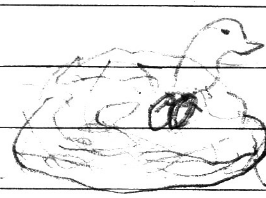

मेरा पहला स्कुल का दीन

अंजली - 5 B

मेरा पहला स्कुल का दीने। मै अपने स्कुल के दिन के लिए बहोत उतसाहीत थि। शुभ - शुभ मेरे मंमी और पापा मुझे उठाने आए। और मै उठ गई और स्कुल के लिए तयार हो गई। फिर मेरे पापा मुझे स्कुल छोर दिये। जब मे स्कुल मे पहुची तो मै थोड़ी घबराई थी। फिर मे अपने कक्षा मे गई, और मै बैठ गई। बाद मे मेरी शिक्षिका आगइ। तब मै डर गई, लेकिन मेरी शिक्षिका मुझे समझाइ। और मैने बहोत सारे दोस्त बनाए। और मेरा पला स्कुल का दिन बहोत अच्छा गया।

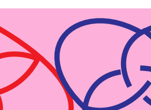

'शब्दों की जुबानी'
'हमरी कविता हमारी कहानी'

संस्कृति - 5

एक चिड़िया थी, डाल पर बैठी हुँई थी।
गीत गुनगुनाती थी, फट से उड़ जाती थी।
दाना खाती हैं, पानी पीती है।
गगन मे उड़ जाती है।

एक दिन उसे, पकड़ लिया शिकारी ने।
न खेल सकती, न उड़ सकती,
न चले उसका मन।
न निकल पाई उन जंजीरों से,
खोलकर अपने पंख।

आखिर ने उसे बेच दिया कीमत में,
हो गई वह बेरंग।
बेचारी चिड़िया को रहना पड़ा पींजरे में,
न अपने दोस्तों के संग।

कई दिन बित गए सारे,
हो गई कमजोर ।

एक दिन किसी ने बचाया, जैसे हो भगवान ।
उड़ गई फट से, लेकर अपने प्राण ।
आखिर उसके दरवाजे खुले
हो गई वह आजाद ।

जब बाहर निकल गई तो,
उड़ कर बोली धन्यवाद !

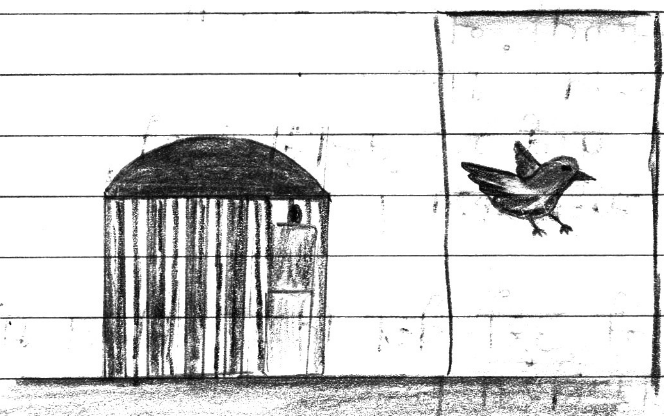

सच्चा दोस्त

मोला कुमार - V

एक बार की बात है एक स्कूल मे दो मित्र थे, दोनो मे बहुत गहरी मित्रता थी। दोनो मित्रो मे से एक का नाम था राहुल और एक का नाम था अमन। अमन को पढ़ाई से बहुत लगाव था पर राहुल वैसा नही था वो हमेशा अपना समय खेल-कुद मे बरबाद करता था। कुछ समय बाद वे दोनो दोस्त बड़े हो गए दसवी मे अमन बहुत अच्छे नम्बरो से पास हुवा लेकिन राहुल बहुत मुस्किल से पास

पास हो पाया। अब वे दोनो मित्र अलग-अलग कॉलेज मे पढ़ रहे थे। जल्द ही अमन एक कंपनी का सी. ई. ओ बन गया। और दुसरी तरफ राहुल नौकरी के तालाश मे रहता। एक दिन राहुल अपने दोस्त के कंपनी मे काम के लिए गया। चुकी वो पढ़ना नही था उसे वहा भी काम न मिल सकता था। परंतू अमन ने उसे पहचान लिया और बोला 'काश तुम बचपन मे पढ़ लेते कोई बात नही मैं तुम्हे अपनी कंपनी मे रख लेता हू' फिर वो दोनो ने मिलकर कंपनी को और बढ़ाया और दोनो अमीर बन गए और खुशी-खुशी रहने लगे

सच्चा दोस्त

चिन्मय सिंह - V 'B'

एक राम नाम का लड़का था उसके दो दोस्त थे। एक का नाम अमित था और दूसरे का नाम था सचिन। एक दिन तीनों बाहर घूम रहे थे तभी उन्हें एक बिखारी दिखा उन लोगों ने मिलकर सोचा की क्यों न हम उस बिखारी की मदद करें। उन्होंने उस बिखारी की कुछ पैसे देकर मदद की। मदद करने के बाद तीनों अपने घर चले गए। अगले दिन जब वो लोग वापस आए तब वो लोग क्रिकेट खेल रहे होते हैं और जब वो लोग क्रिकेट खेल रहे होते हैं तभी उन्हें याद आता है की अमित तो आज क्रिकेट खेलने आया ही नहीं है। तब, वो दोनों मिलकर अमित के घर जाते हैं अमित के परिवार वालों से बात की अमित आज क्रिकेट खेलने क्यों नहीं आया है जब वो लोग वहाँ पहुँचते है तो उन्होंने देखा की अमित के घर के दरवाजे पर ताला लगा हुआ था। तब उन लोगों ने अमित के मम्मी को फोन किया।

अमित की मम्मी ने बताया की अमित की तब्यत खराब है और वो अभी हॉस्पिटल में भर्ति है। तभी वो दोनों हॉस्पिटल गए और अमित की बहुत मदद् की। फिर कुछ दिन बाद अमित ठीक हो जाता है।

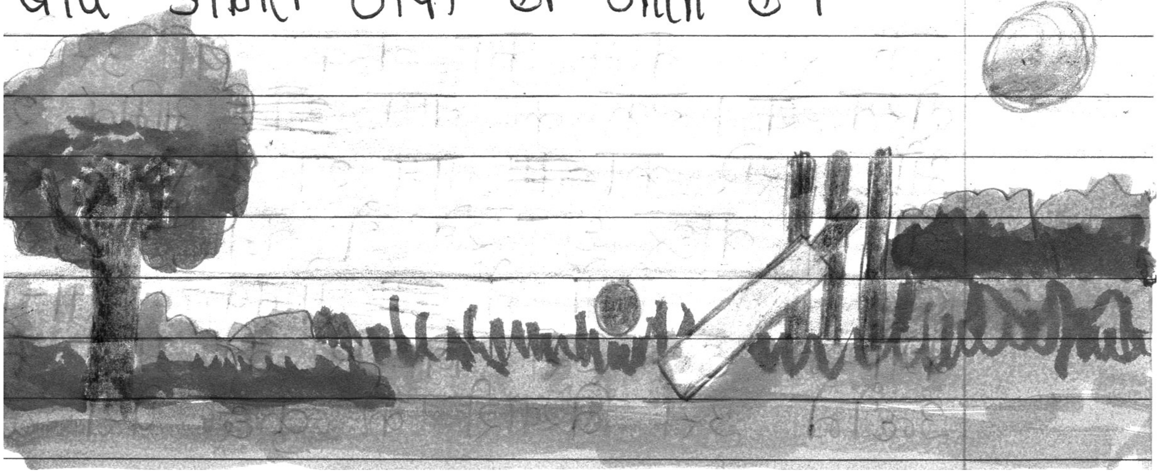

एक चिड़िया थी

शकिब (Shakeb) - 5B

एक बार की बात है एक सुनहरी
चीड़या थी जो एक जंगल में रहती
थी और सारे जानवरो को बदसुरत कहती
और सब का मज़ाक उड़ाती थी एक दीन
एक शेर ने चीड़या के पॉखो को चोट
पहुचा उसके पीछे दौड़ने लगा तभ
सभी जानवरो ने उसे बचा लीया
लेकिन उसे लगा की वह उसे
भी चोट पहुचाना चाहते है
तभ वह जंगल से भाग गई

एक राजाने उसे कैद था और
कैद करलीया दुसरी और सारे
जनवर उसे बचा ने की कोशीश
कर रहे थे तभी बंनदर ने
छलांग मारी चीड़या के पींनरे
को ले अया और भालुने उस
पींनजरे को तोड़ कर उसे
बचा लीया और चीड़िया
को समझ आगया वह
उसके बहुत अचछे दोसत है।

इमानदार लड़का

अयान इलीयाशी -5

एक दीन एक लड़का जीसका नाम
राम वो सबजी लेने जा रहा
होता वो रीकशा लेकर जा ही
रहा था के उसे पीछे से कुछ
चुबता है वो पीछे देखता है तो उसे
एक सोने की नेक्लेस मीली दरअसल
ये नेक्लेस दरबार के राजा ये खबर
जब सबको पता चला सभी लोग
नेक्लेस के पीछे पर गये कोई
बोला व मेरा नेक्लेस है तो कोई
चोरी करने की कोशीश

की राम ने जेसे-तेसे कर
थाने आया और पूलीस के साथ
दरबार मे आये राजा हेरान था
के राम ने अभी तक उसने नेक्लेस
चुराने कोशीश नही कर लेकीन
तभी पूलीस ने बोला-"यही है वो
चौर जीसने आपकी नेक्लेस चूराथी"
पूलस भी लालच मे आगया
सोच के-"अगर मे चौर को पकरवा
दीया तो मुझे सीक्के मीलेंगे
मे ये जो भी है इसे पकरवा देता
हू" परंन्तु पूलीस को ये बात
पता नही थी के राजा सबकुछ पहले से
जानता था और पूलीस जेल मे डालओ लड़के को इनाम दीया

सच्चा दोस्त

आस्था कुमारी - पाँच

रामपुर नामे के गाँव मे दो सच्चे मित्र रहते है। एक का नाम रवी दो घर और दूसरे का नाम राहुल था। दोनो मे बहुत गहरी मित्रता थी। एक दिन दोनो मछील मछली पकड़ने के लिए तलाब के पास गये। राहुल को मछली पकड़ने नही आती थी। रवी ने बोला राहुल तुमहे तुम है तो मछली पकड़नी आती ही नहीं है। रवी ने बोला राहुल को की आज मैं तोमेह तूम है मछली पकड़ना सिखा आ सिखाऊ गा। रवी ने राहुल को मछली पकड़ना सिखाने लगा। तभी रुत रवी ने राहुल से कहा की अब तोम मुझे मछली पकड़ कर दिखायो राहुल मछली पकड़कर जब खाड़ हो आ तब उसका पैर फिसल गया। और राहुल तलाब के अंनद अंदर गीर गया था। रवी ने जल्दी से तलाब मे छलाग लगा दी। और रवी ने जल्दी से राहुल को तलाब से बाहर निकाला। इसे कहते सा है सच्ची मित्र।

शिक्षा - हमें इस कहानी से यह सिख शिक्षा मिलती है की हमें अपनी दोस्त की मदद करनी चाहिए।